الجزء ١٦

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾

उस ने कहा	क्या नहीं	मैं ने कहा	तुझ से	बेशक तू	हरगिज़ न कर सकेगा	मेरे साथ	सब्र	75

قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَىْءٍۢ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِىْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ

उस (मूसा अ) ने कहा अगर	मैं तुम से पूछूँ	किसी चीज़ से	इस के बाद	तो मुझे अपने साथ न रखना	अलबत्ता तुम पहुँच गए

مِنْ لَّدُنِّىْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِۨ اسْتَطْعَمَآ

मेरी तरफ़ से	उज़्र को	76	फिर वह दोनों चले	यहां तक कि	जब वह दोनों आए	एक गावँ वालों के पास	दोनों ने खाना मांगा

اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ

उस के बाशिन्दे	तो उन्हों ने इन्कार कर दिया कि	वह उन की ज़ियाफ़त करें	फिर उन्हों ने पाई (देखी)	उस में (वहां) एक दीवार	वह चाहती थी

اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ

कि वह गिर पड़े	तो उस ने उसे सीधा कर दिया	उस ने कहा	अगर तुम चाहते	ले लते	उस पर	उज्रत	77	उस ने कहा

هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِىْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ

यह	जुदाई	मेरे दरमियान	और तुम्हारे दरमियान	अब तुम्हें बताए देता हूँ	ताबीर	जो	तुम न कर सके	उस पर

صَبْرًا ﴿٧٨﴾ اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِى الْبَحْرِ

सब्र	78	रही	कश्ती	सो वह थी	ग़रीब लोगों की	वह काम करते थे	दर्या में

فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ

सो मैं ने चाहा	कि	मैं उसे ऐबदार कर दूँ	और था	उन के आगे	एक बादशाह	वह पकड़ लेता	हर कश्ती

غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا

ज़बरदस्ती	79	और रहा	लड़का	तो थे	उस के माँ बाप	दोनों मोमिन	सो हमें अन्देशा हुआ	कि उन्हें फंसादे

طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾ ۚ فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً

सरकशी में	और कुफ़्र में	80	पस हम ने इरादा किया	कि बदला दे उन दोनों को	उन का रब	बेहतर	उस से	पाकीज़गी

وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ

और ज़ियादा क़रीब	शफ़क़त	81	और रही	दीवार	सो वह थी	दो (2) बच्चों की	दो यतीम

فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ

शहर में - के	और था	उस के नीचे	ख़ज़ाना	उन दोनों के लिए	और था	उन का बाप	नेक	सो चाहा कि

رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ

तुम्हारा रब	कि वह पहुँचें	अपनी जवानी	और वह दोनों निकालें	अपना ख़ज़ाना	मेहरबानी	से तुम्हारा रब

ع ١٢ ١٠ ١

وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾

और यह मैं ने नहीं किया	से	अपना हुक्म (मरज़ी)	यह	ताबीर (हक़ीक़त)	जो	तुम न कर सके	उस पर	सब्र	82

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾

और आप (स) पूछते हैं	से (बाबत)	ज़ुलक़रनैन	फ़रमा दें	अभी पढ़ता हूँ	तुम पर- सामने	उस से- का	कुछ हाल	83

ख़िज़्र (अ) ने कहा कि क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा था कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा? (75)
मूसा (अ) ने कहा अगर इस के बाद मैं तुम से किसी चीज़ से (मुतअ़ल्लिक़) पूछूँ तो मुझे अपने साथ न रखना, अलबत्ता तुम मेरी तरफ़ से पहुँच गए हो (हदे) उज़्र को। (76)
फिर वह दोनों चले यहां तक कि एक गावँ वालों के पास आए, उन्हों ने उस के बाशिन्दों से खाना मांगा तो उन्हों ने इन्कार कर दिया उन की ज़ियाफ़त करने से, फिर उन्हों ने वहां एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी तो ख़िज़्र (अ) ने उसे सीधा कर दिया, मूसा (अ) ने कहा अगर तम चाहते तो उस पर तम उज्रत ले लते। (77)
उस ने कहा यह मेरे और तुम्हारे दरमियान जुदाई है! अब मैं तुम्हें ताबीर (हक़ीक़ते हाल) बताए देता हूँ जिस पर तुम सब्र न कर सके। (78)
रही कश्ती! सो वह चन्द ग़रीब लोगों की थी जो दर्या में काम (मेहनत मज़दूरी) करते थे और उन के आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) कश्ती को ज़बरदस्ती पकड़ लेता (छीन लेता) था, सो मैं ने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ। (79)
और रहा लड़का! तो उस के माँ बाप दोनों मोमिन थे, सो हमें अन्देशा हुआ कि वह उन्हें सरकशी और कुफ़्र में न फंसादे। (80)
बस हम ने इरादा किया कि उन दोनों को उन का रब बदला दे (जो पाकीज़गी) में उस से बेहतर और शफ़क़त में बहुत ज़ियादा क़रीब हो। (81)
और रही दीवार! सो वह थी शहर के दो (2) यतीम बच्चों की, और उस के नीचे उन दोनों के लिए ख़ज़ाना है, और उन का बाप नेक था, सो तुम्हारे रब ने चाहा कि वह अपनी जवानी को पहुँचें तो वह दोनों तुम्हारे रब की रहमत से अपना ख़ज़ाना निकालें, और यह मैं ने नहीं किया अपनी मरज़ी से, यह है (वह) हक़ीक़त! जिस पर तुम सब्र न कर सके। (82)
और वह आप (स) से पूछते हैं ज़ुलक़रनैन की बाबत, फ़रमा दें, मैं तुम्हारे सामने अभी उस का कुछ हाल पढ़ता (बयान करता हूँ)। (83)

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَأَتْبَعَ

सो वह पीछे पड़ा	84	सामान	हर शै	से	और हम ने उसे दिया	ज़मीन में	उस को	बेशक हम ने कुदरत दी

سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ

चश्मा-नदी	में	डूब रहा है	उस ने पाया उसे	सूरज	गुरूब होने का मुकाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	85	एक सामान

حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّا أَنْ

यह कि	या-चाहे	ऐ ज़ुलक़रनैन	हम ने कहा	एक कौम	उस के नज़्दीक	और उस ने पाया	दलदल

تُعَذِّبَ وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ

जिस ने ज़ुल्म किया	अच्छा	उस ने कहा	86	कोई भलाई	उन में-से	तू इख़्तियार करे	यह कि	और या चाहे	तू सज़ा दे

فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُكْرًا ﴿٨٧﴾ وَأَمَّا مَنْ

जो	और अच्छा	87	बड़ा-सख़्त	अज़ाब	तो वह उसे अज़ाब देगा	अपने रब की तरफ़	वह लौटाया जाएगा	फिर	हम उसे सज़ा देंगे	तो जल्द

آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءً الْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا

अपना काम	मुतअल्लिक़	उस के लिए	और अनक़रीब हम कहेंगे	भलाई	बदला	तो उस के लिए	नेक	और उस ने अमल किया	ईमान लाया

يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ

तुलूअ हो रहा है	उस ने उस को पाया	सूरज	तुलूअ होने का मुकाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	89	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर	88	आसानी

عَلَىٰ قَوْمٍ لَمْ نَجْعَلْ لَهُمْ مِنْ دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا

और हमारे अहाते में है	यही	90	कोई पर्दा	उस के आगे	उन के लिए	हम ने नहीं बनाया	एक कौम पर

بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ

दो दीवारें (पहाड़)	दरमियान	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	92	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर	91	अज़ रूए ख़बर	जो कुछ उस के पास

وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوا

अन्हों ने कहा	93	कोई बात	वह समझें	नहीं लगते थे	एक क़ौम	दोनों के बीच	उस ने पाया

يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ

तो क्या	ज़मीन में	फ़साद करने वाले (फ़सादी)	और माजूज	याजूज	बेशक	ऐ ज़ुलक़रनैन

نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ

उस ने कहा	94	एक दीवार	और उन के दरमियान	हमारे दरमियान	कि तू बनादे	पर-ताकि	कुछ माल	तेरे लिए	हम कर दें

مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ

और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	मैं बना दूँगा	कुव्वत से	पस तुम मेरी मदद करो	बेहतर	मेरा रब	उस में	जिस पर कुदरत दी मुझे

رَدْمًا ﴿٩٥﴾ آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ

उस ने कहा	दोनों पहाड़	दरमियान	उस ने बराबर कर दिया	जब	यहां तक कि	लोहे के तख़्ते	मुझे ला दो तुम	95	मज़बूत आड़

انْفُخُوا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

96	पिघला हुआ तांबा	उस पर	मैं डालूँ	ले आओ मेरे पास	उस ने कहा	आग	जब उसे कर दिया	यहां तक कि	धोंको

बेशक हम ने उस को ज़मीन में कुदरत दी और हम ने उसे हर शै का सामान दिया था। (84) सो वह एक सामान के पीछे पड़ा, (85) यहां तक कि वह सूरज के गुरूब होने के मुकाम पर पहुँचा, उस ने उसे पाया (देखा) कि वह दलदल की नदी में डूब रहा है, और उस के नज़्दीक उस ने एक क़ौम पाई, हम ने कहा ऐ ज़ुलक़रनैन! (तुझे इख़्तियार है) चाहे तू सज़ा दे, चाहे उन से कोई भलाई इख़्तियार करे। (86) उस ने कहा, अच्छा! जिस ने ज़ुल्म किया तो जल्द हम उसे सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब की तरफ़ लौटाया जाएगा तो वह उसे सख़्त अज़ाब देगा। (87) और अच्छा! जो ईमान लाया और उस ने अमल किए नेक, तो उस के लिए बदला है भलाई, और अनक़रीब हम उस के लिए अपने काम में आसानी (की बात) कहेंगे। (88) फिर वह एक (और) सामान के पीछे पड़ा। (89) यहां तक कि जब वह सूरज के तुलूअ होने के मुकाम पर पहुँचा तो उस को पाया (देखा) कि वह एक ऐसी क़ौम पर तुलूअ हो रहा है जिन के लिए हम ने उस (सूरज) के आगे नहीं बनाया था कोई पर्दा (ओट)। (90) यह है (हक़ीक़त) और जो कुछ उस के पास था उसकी ख़बर हमारे अहाता-ए-(इल्म) में है। (91) फिर वह (एक और) सामान के पीछे पड़ा। (92) याहं तक कि जब वह पहुँचा दो पहाड़ों के दरमियान, उस ने उन दोनों के बीच में एक क़ौम पाई, वह लगते न थे कि कोई बात समझें। (93) अन्हों ने कहा ऐ ज़ुलक़रनैन! बेशक याजूज और माजूज ज़मीन में फ़सादी हैं तो क्या हम तेरे लिए (जमा) कर दें कुछ माल? ता कि हमारे और उन के दरमियान एक दीवार बना दे। (94) उस ने कहा जिस पर मुझे मेरे रब ने कुदरत दी वह बेहतर है, पस तुम मेरी मदद करो कुव्वत (बाज़ू) से, मैं तुम्हारे और उन के दरमियान एक आड़ बना दूँगा। (95) मझे लोहे के तख़्ते ला दो, यहां तक कि जब उस ने बराबर कर दिया दोनों पहाडों के दरमियान, उस ने कहा (अब) धोंको, यहां तक कि जब (धोंक कर) उसे आग कर दिया, उस ने कहा मेरे पास लाओ कि मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डालूँ, (96)

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ

उस ने कहा	97	नक़ब	उस में	और वह न लगा सकेंगे	उस पर चढ़ें	कि	फिर न कर सकेंगे	

هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ

और है	हमवार	उस को कर देगा	मेरा रब	वादा	आएगा	पस जब	मेरे रब से	रहमत	यह

وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ

बाज़ (दूसरे) के अन्दर	रेला मारते	उस दिन	उन के बाज़	और हम छोड़ देंगे	98	सच्चा	मेरा रब	वादा

وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ

काफ़िरों के	उस दिन	जहन्नम	और हम सामने कर देंगे	99	सब को	फिर हम उन्हें जमा करेंगे	और फूंका जाएगा सूर

عَرْضَا ﴿١٠٠﴾ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا

और वह थे	मेरा ज़िक्र	से	पर्दे में	उन की आँखें	थीं	वह जो कि	100	बिलकुल सामने

ع ١١ ١٩ ٢ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا

कि वह बना लेंगे	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया	क्या गुमान करते हैं	101	सुनना	न ताक़त रखते

عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾

102	ज़ियाफ़त	काफ़िरों के लिए	जहन्नम	हम ने तैयार किया	बेशक हम	कारसाज़	मेरे सिवा	मेरे बन्दे

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ

उन की कोशिश	बरबाद हो गई	वह लोग	103	आमाल के लिहाज़ से	बदतरीन घाटे में	हम तुम्हें बतलाएं	क्या	फ़रमा दें

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	104	काम	अच्छे कर रहें हैं	कि वह	ख़याल करते हैं	और वह	दुनिया की ज़िन्दगी	में

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ

पस हम क़ाइम न करेंगे	उन के अ़मल (जमा)	पस अकारत गए	और उस की मुलाक़ात	अपना रब	आयतों का	जिन लोगों ने इन्कार किया

لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا

उन्हों ने कुफ़्र किया	इस लिए कि	जहन्नम	उन का बदला	यह	105	कोई वज़न	क़ियामत के दिन	उन के लिए

وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	बेशक	106	हँसी मज़ाक़	और मेरे रसूल	मेरी आयात	और ठहराया

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

उस में	हमेशा रहेंगे	107	ज़ियाफ़त	फ़िरदौस के बाग़ात	उन के लिए	हैं	और उन्हों ने नेक अ़मल किए

لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ

मेरा रब	बातों के लिए	रोशनाई	समन्दर	हो	अगर	फ़रमा दें	108	जगह बदलना	वहां से	वह न चाहेंगे

لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

109	मदद को	उस जैसा	हम ले आएं	और अगरचे	मेरे रब की बातें	कि ख़त्म हो	पहले	तो ख़त्म हो जाए समन्दर

फिर वह (याजूज माजूज) न उस पर चढ़ सकेंगे, और न उस पर नक़ब लगा सकेंगे। (97)
उस ने कहा यह मेरे रब की (तरफ़) से रहमत है, पस जब आएगा मेरे रब का वादा (मक़र्ररा वक़्त) वह उस को हमवार कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है। (98)
और हम छोड़ देंगे उन के बाज़ को उस दिन रेला मारते हुए एक दूसरे के अन्दर, और सूर फूंका जाएगा, फिर हम उन सब को जमा करेंगे। (99)
और हम उस दिन जहन्नम सामने कर देंगे काफ़िरों के बिलकुल सामने। (100)
और मेरे ज़िक्र से जिन की आँखें पर्दा-ए-(ग़फ़लत) में थीं, वह सुनने की ताक़त न रखते थे (सुन न सकते थे)। (101)
जिन लोगों ने कुफ़्र किया, क्या वह गुमान करते हैं? कि वह मेरे बन्दों को बना लेंगे मेरे सिवा कारसाज़। बेशक हम ने तैयार किया जहन्नम को काफ़िरों की ज़ियाफ़त के लिए। (102)
फ़रमा दें क्या हम तुम्हें बतलाएं आमाल के लिहाज़ से बदतरीन घाटे में (कौन हैं)! (103)
वह लोग जिन की बरबाद हो गई कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में, और वह ख़याल करते हैं कि वह अच्छे काम कर रहे हैं। (104)
यही लोग हैं जन्हों ने इन्कार किया अपने रब की आयतों का और उस की मुलाक़ात का, पस अकारत गए उन के अ़मल, पस क़ियामत के दिन उन के लिए कोई वज़न क़ाइम न करेंगे (उन के अ़मल बे वज़न होंगे)। (105)
यह उन का बदला है जहन्नम, इस लिए कि उन्हों ने कुफ़्र किया और मेरी आयतों को और मेरे रसूलों को हँसी मज़ाक़ ठहराया। (106)
बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए उन के लिए ज़ियाफ़त है फ़िरदौस (बहिश्त) के बाग़ात। (107)
उन में हमेशा रहेंगे, वह वहां से जगह बदलना न चाहेंगे। (108)
फ़रमा दें अगर समन्दर मेरे रब की बातें (लिखने के लिए) रोशनाई बन जाए तो समन्दर (का पानी) ख़तम हो जाएगा उस से पहले कि मेरे रब की बातें ख़तम हों अगरचे हम उस की मदद को उस जैसा (और समन्दर भी) ले आएं। (109)

आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम जैसा बशर हूँ (अलबत्ता) मेरी तरफ़ वहि की जाती है, तुम्हारा माबूद माबूदे वाहिद है, सो जो अपने रब की मुलाक़ात की उम्मीद रखता है उसे चाहिए कि वह अच्छे अ़मल करे और वह अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। **(110)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

काफ़-हा-या-ऐन-साद। **(1)** यह तज़्किरा है तेरे रब की रहमत का, उस के बन्दे ज़करिया (अ) पर। **(2)** (याद करो) जब उस ने अपने रब को आहिस्ता से पुकारा। **(3)** उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक (बुढ़ापे से) मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं, और मेरा सर सफ़ेद बालों से शोले मारने लगा है (बिलकुल सफ़ेद हो गया) और मैं (कभी) तुझ से मांग कर ऐ मेरे रब महरूम नहीं रहा हूँ। **(4)** और अलबत्ता मैं अपने बाद अपने रिश्तेदारों से डरता हूँ, और मेरी बीवी बांझ है, तू मुझे अ़ता फ़रमा अपने पास से एक वारिस। **(5)** वह वारिस हो मेरा और औलादे याक़ूब (अ) का, और ऐ मेरे रब! उसे पसंदीदा बना दे। **(6)** (इरशाद हुआ) ऐ ज़करिया (अ)! बेशक हम तुझे एक लड़के की बशारत देते हैं, उस का नाम यहया (अ) है। हम ने इस से क़ब्ल किसी को उस का हम नाम नहीं बनाया। **(7)** उस ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि मेरी बीवी बांझ है, और मैं पहुँच गया हूँ बुढ़ापे की इन्तिहाई हद को। **(8)** उस ने कहा उसी तरह, तेरा रब फ़रमाता है, यह (अम्र) मुझ पर आसान है, और इस से क़ब्ल मैं ने तुझे पैदा किया, जब कि तू कुछ भी न था। **(9)** उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी (मुक़र्रर) कर दे, फ़रमाया तेरी निशानी (यह है) कि तू लोगों से बात न करेगा तीन रात (दिन) ठीक (होने के बावजूद)। **(10)** फिर वह मेहराबे (इबादत) से अपनी क़ौम के पास निकल कर (आया) तो उस ने उन की तरफ़ इशारा किया कि उसकी पाकीज़गी बयान करो सुबह ओ शाम। **(11)**

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ

हो	सो जो	वाहिद	माबूद	तुम्हारा माबूद	फ़क्त	मेरी तरफ़	वहि की जाती है	तुम जैसा	बशर	इस के सिवा नहीं कि मैं	फ़रमा दें

يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ع ۝١١٠ ع ١٢ ٩ ٣

110	किसी को	अपना रब	इबादत में	और वह शरीक न करे	अच्छे	अ़मल	तो उसे चाहिए कि वह अ़मल करे	अपना रब	मुलाक़ात	उम्मीद रखता है

آيَاتُهَا ٩٨ ❀ سُوْرَةُ مَرْيَمَ (١٩) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकुआत 6 (19) सूरह मरयम आयात 98

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

كٓهٰيٰعٓصٓ ۝١ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝٢ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ

अपना रब	उस ने पुकारा	जब	2	ज़करिया (अ)	अपना बन्दा	तेरा रब	रहमत	तज़्किरा	1	काफ़ हा या ऐन साद

نِدَآءً خَفِيًّا ۝٣ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ

सर	और शोले मारने लगा	मेरी	हड्डियां	कमज़ोर हो गई	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	3	आहिस्ता से	पुकारना

شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝٤ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ

अपने रिश्तेदार	डरता हूँ	और अलबत्ता मैं	4	महरूम	ऐ मेरे रब	तुझ से मांग कर	और मैं नहीं रहा	सफ़ेद बाल

مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۝٥ يَّرِثُنِيْ

मेरा वारिस हो	5	एक वारिस	अपने पास से	तू मुझे अ़ता कर	बांझ	मेरी बीवी	और है	अपने बाद

وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝٦ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ

तुझे बशारत देते हैं	बेशक हम	ऐ ज़करिया (अ)	6	पसन्दीदा	ऐ मेरे रब	और उसे बनादे	औलादे याक़ूब (अ)	से - का	और वारिस हो

بِغُلٰمِ ِۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝٧ قَالَ رَبِّ اَنّٰى

कैसे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	7	कोई हम नाम	इस से क़ब्ल	उस का	नहीं बनाया हम ने	यहया	उस का नाम	एक लड़का

يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ

बुढ़ापा	से - की	और मैं पहुँच चुका हूँ	बांझ	मेरी बीवी	जब कि वह है	मेरे लिए (मेरा) लड़का	होगा वह

عِتِيًّا ۝٨ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ

तुझे पैदा किया	और मैं ने	आसान	मुझ पर	वह (यह)	तेरा रब	फ़रमाया	उसी तरह	उस ने कहा	8	इन्तिहाई हद

مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ۝٩ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ

फ़रमाया	कोई निशानी	मेरे लिए	कर दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	9	कोई चीज़ (कुछ भी)	जब कि तू न था	क़ब्ल	इस से

اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝١٠ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ

अपनी क़ौम	पास	फिर वह निकला	10	ठीक	रात	तीन	लोग (जमा)	तू न बात करेगा	तेरी निशानी

مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝١١

11	और शाम	सुबह	कि उस की पाकीज़गी बयान करो	उन की तरफ़	तो उस ने इशारा किया	मेहराब	से

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۙ﴿۱۲﴾ وَّحَنَانًا

और शफ़क़त	12	बचपन से	नबूवत-दानाई	और हम ने उसे दी	मज़बूती से	किताब	पकड़ो (थाम लो)	ऐ यहया (अ)

مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ؕ وَكَانَ تَقِيًّا ۙ﴿۱۳﴾ وَّبَرًّا ۢ بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ

और न था वह	अपने माँ बाप से	और अच्छा सुलूक करने वाला	13	परहेज़गार	और वह था	और पाकीज़गी	अपने पास से

جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿۱۴﴾ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ

और जिस दिन	वह फ़ौत होगा	और जिस दिन	वह पैदा हुआ	जिस दिन	उस पर	और सलाम	14	नाफ़रमान	गर्दन कश

وقف لازم ع ٢٥

يُبْعَثُ حَيًّا ﴿۱۵﴾ ع وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا

अपने घर वालों से	जब वह यकसू हो गई	मरयम (अ)	किताब में	और ज़िक्र करो	15	ज़िन्दा हो कर	उठाया जाएगा

مَكَانًا شَرْقِيًّا ۙ﴿۱۶﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۟ فَاَرْسَلْنَآ

फिर हम ने भेजा	पर्दा	उन की तरफ़	से	फिर डाल लिया	16	मशरिक़ी	मकान

اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿۱۷﴾ قَالَتْ اِنِّىْٓ اَعُوْذُ

पनाह में आती हूँ	बेशक मैं	वह बोली	17	ठीक	एक आदमी	उस के लिए	शक्ल बन गया	अपनी रूह (फ़रिश्ता)	उस की तरफ़

بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿۱۸﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ

तेरे रब का	भेजा हुआ	कि मैं	इस के सिवा नहीं	उस ने कहा	18	परहेज़गार	अगर तू है	तुझ से	अल्लाह की

لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿۱۹﴾ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّلَمْ

जब कि नहीं	लड़का	मेरे	होगा	कैसे	वह बोली	19	पाकीज़ा	एक लड़का	तुझ को	ताकि अ़ता करूँ

الربع

يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿۲۰﴾ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ

तेरा रब	फ़रमाया	यूँही	उस ने कहा	20	बदकार	और मैं नहीं हूँ	किसी बशर ने	मुझे छुआ

هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ

और है	अपनी तरफ़ से	और रहमत	लोगों के लिए	एक निशानी	और ताकि हम उसे बनाएं	आसान	मुझ पर	वह-यह

اَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿۲۱﴾ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿۲۲﴾

22	दूर	एक जगह	उसे ले कर	पस वह चली गई	फिर उसे हम्ल रह गया	21	तै शुदा	एक अम्र

فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ

मर चुकी होती	अए काश मैं	वह बोली	खजूर का दरख़्त	जड़	तरफ़	दर्दज़ाह	फिर उसे ले आया

قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿۲۳﴾ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ

उस के नीचे	से	पस उसे आवाज़ दी	23	भूली बिसरी	और मैं हो जाती	इस से क़ब्ल

اَلَّا تَحْزَنِىْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿۲۴﴾ وَهُزِّىْٓ

और हिला	24	एक चश्मा	तेरे नीचे	तेरा रब	कर दिया है	कि न घबरा तू

اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿۲۵﴾ ز

25	खजूरें	ताज़ा ताज़ा	तुझ पर	झड़ पड़ेंगी	खजूर	तने को	अपनी तरफ़

(इरशादे इलाही हुआ) ऐ यहया (अ)! किताब को मज़बूती से थाम लो, और हम ने उसे बचपन (ही) से नबूवत ओ दानाई देदी। **(12)** और अपने पास से शफ़क़त और पाकीज़गी (अ़ता की) और वह परहेज़गार था, **(13)** और वह अपने माँ बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था, और न था गर्दन कश नाफ़रमान। **(14)** और सलाम (सलामती) हो उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ, और जिस दिन वह फ़ौत होगा, और जिस दिन ज़िन्दा करके उठाया जाएगा। **(15)** और किताब (क़ुरआन) में मरयम (अ) का ज़िक्र (याद) करो, जब वह अपने घर वालों से अलग हो गई एक मशरिक़ी मकान में। **(16)** फिर उस ने डाल लिया उन की तरफ़ से पर्दा, फिर हम ने उस की तरफ़ अपने फ़रिश्ते को भेजा, वह उस के लिए ठीक एक आदमी की शक्ल बन कर आया। **(17)** वह बोली बेशक मैं तुझ से अल्लाह की पनाह में आती हूँ, अगर तू परहेज़गार है (यहां से हट जा)। **(18)** उस ने कहा इस के सिवा नहीं कि मैं तेरे रब का भेजा हुआ हूँ ताकि तुझे एक पाकीज़ा लड़का अ़ता करूँ। **(19)** वह बोली मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि न मुझे किसी बशर ने छुआ, और न मैं बदकार हूँ। **(20)** उस ने कहा उसी तरह (अल्लाह का फ़ैसला है), तेरे रब ने फ़रमाया कि यह मुझ पर आसान है, और ताकि हम उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएं, और अपनी तरफ़ से रहमत, और यह है एक तै शुदा अम्र। **(21)** फिर उसे हम्ल रह गया, पस वह उसे ले कर एक दूर जगह चली गई। **(22)** फिर दर्दे ज़ह उसे खजूर के दरख़्त की जड़ की तरफ़ ले आया, वह बोली, ए काश! मैं इस से क़ब्ल मर चुकी होती, और मैं हो जाती भूली बिसरी। **(23)** पस उसे उस के नीचे (वादी) से (फ़रिश्ते ने) आवाज़ दी: तू घबरा नहीं, तेरे रब ने तेरे नीचे एक चश्मा (जारी) कर दिया है। **(24)** और खजूर का तना अपनी तरफ़ हिला, तुझ पर ताज़ा खजूरें झड़ पड़ेंगी। **(25)**

तू खा और पी और आँखें ठंडी कर, फिर अगर तू किसी आदमी को देखे तो कह दे कि मैं ने रहमान के लिए रोज़े की नज़्र मानी है, पस आज हरगिज़ किसी आदमी से कलाम न करूँगी। (26)

फिर वह उसे उठा कर अपनी क़ौम के पास लाई, वह बोले ऐ मरयम (अ)! तू लाई है ग़ज़ब की शै। (27)

ऐ हारून (अ) की बहन! तेरा बाप बुरा आदमी न था और न तेरी माँ ही थी बदकार। (28)

तो मरयम ने उस (बच्चे) की तरफ़ इशारा किया, वह बोलेः हम गहवारे (गोद) के बच्चे से कैसे बात करें? (29)

बच्चे ने कहाः बेशक मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उस ने मुझे किताब दी, (30)

और मुझे नबी बनाया, और जहां कहीं मैं हूँ मुझे बाबरकत बनाया है, और जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ मुझे हुक्म दिया है नमाज़ का और ज़कात का, (31)

और अपनी माँ से अच्छा सुलूक करने का, और उस ने मुझे नहीं बनाया सरकश, बदनसीब। (32)

और सलामती हो मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन मैं मरूँगा, और जिस दिन मैं ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा। (33)

यह है ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ), सच्ची बात जिस में वह (लोग) शक करते हैं। (34)

अल्लाह के लिए (सज़ावार) नहीं है कि वह कोई बेटा बनाए, वह पाक है, जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उस के सिवा नहीं कि वह कहता है "हो जा" पस वह हो जाता है। (35)

और बेशक अल्लाह मेरा और तुम्हारा रब है, पस उस की इबादत करो, यह सीधा रास्ता है। (36)

(फिर अहले किताब के) फ़िरक़ों ने इख़्तिलाफ़ किया बाहम, पस ख़राबी है काफ़िरों के लिए (क़ियामत के) बड़े दिन की हाज़िरी से, (37)

क्या कुछ सुनेंगे! और क्या कुछ देखेंगे! जिस दिन वह हमारे सामने आएंगे, लेकिन आज के दिन ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (38)

فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ

कोई	आदमी	से	फिर अगर तू देखे	आँखें	और ठंडी कर	और पी	तू खा

فَقُوْلِيْۤ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۚ ﴿٢٦﴾

26	किसी आदमी	आज	पस मैं हरगिज़ कलाम न करूँगी	रोज़ा	रहमान के लिए	कि मैं ने नज़्र मानी है	तो कह दे

فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۭ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔـا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾

27	बुरी (ग़ज़ब की)	शै	तू लाई है	ऐ मरयम	वह बोले	उसे उठाए हुए	अपनी क़ौम	फिर वह उसे ले कर आई

يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾

28	बदकार	तेरी माँ	और न थी	बुरा	आदमी	तेरा बाप	था	न	ऐ हारून (अ) की बहन

فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۭ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾

29	बच्चा	गहवारे में	जो है	कैसे हम बात करें	वह बोले	उस की तरफ़	तो मरयम ने इशारा किया

قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۣ اٰتٰىنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ﴿٣٠﴾ وَّجَعَلَنِيْ

और मुझे बनाया है	30	नबी	और मुझे बनाया है	किताब	उस ने मुझे दी है	अल्लाह का बन्दा	बच्चे ने कहा बेशक मैं

مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ

जब तक मैं रहूँ	और ज़कात का	नमाज़ का	और मुझे हुक्म दिया है उस ने	मैं हूँ	जहां कहीं	बाबरकत

حَيًّا ﴿٣١﴾ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَتِيْ ۡ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿٣٢﴾ وَالسَّلٰمُ

और सलामती	32	बदनसीब	सरकश	और उस ने मुझे नहीं बनाया	और अच्छा सुलूक करने वाला अपनी माँ से	31	ज़िन्दा

عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾ ذٰلِكَ

यह	33	ज़िन्दा हो कर	उठाया जाऊँगा	और जिस दिन	मैं मरूँगा	और जिस दिन	मैं पैदा हुआ	जिस दिन	मुझ पर

عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٣٤﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ

नहीं है अल्लाह के लिए	34	वह शक करते हैं	वह जिस में	सच्ची	बात	इब्ने मरयम	ईसा (अ)

اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ

वह कहता है	तो इस के सिवा नहीं	किसी काम	जब वह फ़ैसला करता है	वह पाक है	बेटा	कोई	वह बनाए	कि

لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٣٥﴾ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا

यह	पस उस की इबादत करो	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह	और बेशक	35	पस वह हो जाता है	हो जा	उस को

صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٣٦﴾ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ

पस ख़राबी	आपस में (बाहम)	फ़िर्क़े	फिर इख़्तिलाफ़ किया	36	सीधा	रास्ता

لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٣٧﴾ اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ

और देखेंगे	क्या कुछ	सुनेंगे	37	बड़ा दिन	हाज़िरी	से	काफ़िरों के लिए

يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾

38	खुली गुमराही	में	आज के दिन	ज़ालिम (जमा)	लेकिन	वह हमारे सामने आएंगे	जिस दिन

وقف لازم

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ

और वह	ग़फ़लत में हैं	लेकिन वह	काम	जब फ़ैसला कर दिया जाएगा	हसरत का दिन	और उन को डरावें आप (स)

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا

और हमारी तरफ़	उस पर	और जो	ज़मीन	वारिस होंगे	बेशक हम	39	ईमान नहीं लाते

ع ٢٥ ٢ ٥

يُرْجَعُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۬ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا

सच्चे	बेशक वह थे	इब्राहीम (अ)	किताब में	और याद करो	40	वह लौटाए जाएंगे

نَّبِيًّا ﴿٤١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ

और न देखे	जो न सुने	तुम क्यों परस्तिश करते हो	ऐ मेरे अब्बा	अपने बाप को	जब उस ने कहा	41	नबी

وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا ﴿٤٢﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا

जो	वह इल्म	बेशक मेरे पास आया है	बेशक मैं	ऐ मेरे अब्बा	42	कुछ	तुम्हारे	और न काम आए

لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾ يٰۤاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ

शैतान	परस्तिश न कर	ऐ मेरे अब्बा	43	सीधा	रास्ता	मैं तुम्हें दिखाऊँगा	पस मेरी बात मानो	तुम्हारे पास नहीं आया

اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ

कि	डरता हूँ	बेशक मैं	ऐ मेरे अब्बा	44	नाफ़रमान	रहमान का	है	शैतान	बेशक

يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾ قَالَ اَرَاغِبٌ

क्या रूगर्दां	उस ने कहा	45	साथी	शैतान का	फिर तू हो जाए	रहमान	से - का	अ़ज़ाब	तुझे आपकड़े

اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ﴿٤٦﴾

46	एक मुद्दत के लिए	और मुझे छोड़ दे	तो मैं तुझे संगसार कर दूँगा	तू बाज़ न आया	अगर	ऐ इब्राहीम (अ)	मेरे माबूद (जमा)	से	तू

قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ﴿٤٧﴾

47	मेहरबान	मुझ पर	है	बेशक वह	अपना रब	तेरे लिए	मैं अभी बख़्शिश मांगूँगा	तुझ पर	सलाम	उस ने कहा

وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۖ عَسٰۤى

उम्मीद है	अपना रब	और मैं इबादत करूँगा	अल्लाह	सिवाए	तुम परस्तिश करते हो	और जो	और किनारा कशी करता हूँ तुम से

اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ﴿٤٨﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ

वह परस्तिश करते थे	और जो	वह किनारा कश होगए उन से	फिर जब	48	महरूम	अपना रब	इबादत से	कि न रहूँगा

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾

49	नबी	हम ने बनाया	और सब को	और याकूब (अ)	इसहाक़ (अ)	उस को	हम ने अ़ता किया	अल्लाह	सिवाए

ع ١٠ ٣ ٦

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾

50	निहायत बुलन्द	सच्चा-जमील	ज़िक्र	उन का	और हम ने किया	अपनी रहमत	से	उन्हें	और हम ने अ़ता किया

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ۫ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾

51	नबी	रसूल	और था	बरगुज़ीदा	था	बेशक वह	मूसा (अ)	किताब में	और याद करो

और आप (स) उन्हें हस्रत के दिन से डरावें जब मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा, लेकिन वह ग़फ़्लत में हैं, और वह ईमान नहीं लाते। (39)
बेशक हम वारिस होंगे ज़मीन के और जो कुछ उस पर है, और वह हमारी तरफ़ लौटाए जाएंगे। (40)
और किताब में इब्राहीम (अ) को याद करो, बेशक वह सच्चे नबी थे। (41)
जब उस ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे अब्बाः तुम क्यों उस की परस्तिश करते हो? जो न कुछ सुने और न देखे, और न काम आए तुम्हारे कुछ भी। (42)
ऐ मेरे अबबा! बेशक मेरे पास वह इल्म (वहि) आया है जो तुम्हारे पास नहीं आया, पस मेरी बात मानो, मैं तुम्हें ठीक सीधा रास्ता दिखाऊँगा। (43)
ऐ मेरे अबबा! शैतान की परस्तिश न कर, बेशक शैतान रहमान का नाफ़रमान है। (44)
ऐ मेरे अबबा! बेशक मैं डरता हूँ कि (कहीं) रहमान का अ़ज़ाब तुझे (न) आ पकड़े। फिर तू हो जाए शैतान का साथी। (45)
उस ने कहा ऐ इब्राहीम (अ)! क्या तू मेरे माबूदों से रूगर्दां है? अगर तू बाज़ न आया तो मैं तुझे ज़रूर संगसार कर दूँगा, और मुझे एक मुद्दत के लिए छोड़ दे। (46)
इब्राहीम (अ) ने कहा तुझ पर सलाम हो, मैं अभी तेरे लिए अपने रब से बख़्शिश मांगूँगा, बेशक वह मुझ पर मेहरबान है, (47)
और मैं किनारा कशी करता हूँ तुम से और अल्लाह के सिवा जिन की तुम परस्तिश करते हो, और मैं अपने रब की इबादत करूँगा, उम्मीद है कि मैं अपने रब की इबादत करके महरूम न रहूँगा। (48)
फिर जब वह (इब्राहीम अ) उन से और अल्लाह के सिवा वह जिन की परस्तिश करते थे किनारा कश हो गए, हम ने उस को इसहाक़ (अ) और याकूब (अ) अ़ता किए और (उन) सब को हम ने नबी बनाया। (49)
और हम ने अपनी रहमत से उन्हें (बहुत कुछ) अ़ता किया और हम ने उन का ज़िक्रे जमील निहायत बुलन्द किया। (50)
और किताब में मूसा (अ) को याद करो, बेशक वह बरगुज़ीदा थे, और रसूल नबी थे। (51)

وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾

52	राज़ बताने को	और उसे नज़्दीक बुलाया	दाहिनी	कोहे तूर	जानिब	से	और हम ने उसे पुकारा

وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾ وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ

किताब में	और याद करो	53	नबी	हारून (अ)	उस का भाई	अपनी रहमत से	उसे	और हम ने अ़ता किया

اِسْمٰعِيْلَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾

54	नबी	रसूल	और थे	वादे का सच्चा	थे	बेशक वह	इस्माईल (अ)

وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۖ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾

55	पसन्दीदा	अपने रब के हां	और वह थे	और ज़कात	नमाज़ का	अपने घर वाले	और हुक्म देते थे

وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾ وَّرَفَعْنٰهُ

और हम ने उसे उठा लिया	56	नबी	सच्चे	थे	बेशक वह	इदरीस (अ)	किताब में	और याद करो

مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ

नबी (जमा)	से	उन पर	अल्लाह ने इन्आ़म किया	वह जिन्हें	यह वह लोग	57	बुलन्द	एक मुक़ाम

مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۖ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ

औलाद	और से	नूह (अ)	साथ	सवार किया हम ने	और उन से जिन्हें	औलादे आदम	से

اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۖ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۭ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ

उन पर	जब पढ़ी जातीं	और हम ने चुना	हम ने हिदायत दी	और उन से जिन्हें	इब्राहीम (अ) और याकूब (अ)

اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿٥٨﴾ السجدة فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ

चन्द जांनशीन (ना ख़लफ़)	उन के बाद	फिर जांनशीन हुए	58	और रोते हुए	सिज्दा करते हुए	वह गिर पड़ते	रहमान की आयतें

اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾

59	गुमराही	उन्हें मिलेगी	पस अ़नक़रीब	ख़ाहिशात	और पैरवी की	नमाज़	उन्हों ने गंवादी

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ

वह दाख़िल होंगे	पस यही लोग	नेक	और अ़मल किए	और ईमान लाया	तौबा की	जो-जिस	मगर

الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ﴿٦٠﴾ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨالَّتِىْ وَعَدَ

वादा किया	वह जो	हमेशगी के बाग़ात	60	कुछ-ज़रा	और उन का न नुक़्सान किया जाएगा	जन्नत

الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ

वह न सुनेंगे	61	आने वाला	उस का वादा	है	बेशक वह	ग़ाइबाना	अपने बन्दे (जमा)	रहमान

فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ۭ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٢﴾

62	और शाम	सुब्ह	उस में	उन का रिज़्क़	और उन के लिए	सिवा सलाम	बेहूदा	उस में

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِىْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

63	परहेज़गार	होंगे	जो	अपने बन्दे	से-को	हम वारिस बनाएंगे	वह जो कि	जन्नत	यह

السجدة ٥

और हम ने उसे कोहे तूर की दाहिनी जानिब से पुकारा, और हम ने उसे राज़ बतलाने को नज़्दीक बुलाया। (52)
और हम ने उसे अपनी रहमत से उस का भाई हारून (अ) अ़ता किया। (53)
और किताब में इस्माईल (अ) को याद करो, बेशक वह वादे के सच्चे थे, और रसूल नबी थे। (54)
और वह अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे, और वह अपने रब के हां पसंदीदा थे। (55)
और किताब में इदरीस (अ) को याद करो, बेशक वह सच्चे नबी थे। (56)
और हम ने उसे एक बुलन्द मुक़ाम पर उठा लिया। (57)
यह हैं नबियों में से वह जिन पर अल्लाह ने इन्आ़म किया औलादे आदम में से, और उन में से जिन्हें हम ने नूह (अ) के साथ (कश्ती में) सवार किया, और इब्राहीम (अ) और याकूब (अ) की औलाद में से, और उन में से जिन्हें हम ने हिदायत दी, और चुना, जब उन पर रहमान की आयतें पढ़ी जातीं वह ज़मीन पर गिर पड़ते सिज्दा करते और रोते हुए। (58)
फिर उन के बाद चन्द नाख़लफ़ जांनशीन हुए, उन्हों ने नमाज़ गंवादी, और ख़ाहिशाते (नफ़्सानी) की पैरवी की, पस अ़नक़रीब उन्हें गुमराही (की सज़ा) मिलेगी। (59)
मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अ़मल किए, पस यही लोग हैं जो जन्नत में दाख़िल होंगे, और ज़र्रा भर भी उन का नुक़्सान न किया जाएगा, (60)
हमेशागी के बाग़ात में जिन का वादा रहमान ने ग़ाइबाना अपने बन्दों से किया, बेशक उस का वादा आने वाला है। (61)
और उस में सलाम के सिवा कोई बेहूदा बात न सुनेंगे, और उन के लिए उस में सुब्ह ओ शाम उन का रिज़्क़ है। (62)
यह वह जन्नत है जिस का हम अपने (उन) बन्दों को वारिस बनाएंगे जो परहेज़गार होंगे। (63)

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا

हमारे पीछे	और जो	जो हमारे हाथों में (आगे)	उस के लिए	तुम्हारा रब	हुक्म से	मगर	हम उतरते	और नहीं

وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों का रब	64	भूलने वाला	तुम्हारा रब	है	और नहीं	उस के दरमियान	और जो

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ

तू जानता है	क्या	उस की इबादत पर	और साबित क़दम रहो	पस उसी की इबादत करो	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन

ع ١٥ لَهٗ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾

66	ज़िन्दा	मैं निकाला जाऊँगा	तो फिर	मैं मर गया	क्या जब	इन्सान	और कहता है	65	हम नाम कोई	उस का

اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْــًٔا ﴿٦٧﴾

67	कुछ भी	जब कि वह न था	इस से क़ब्ल	हम ने उसे पैदा किया	बेशक हम	इन्सान	याद करता	क्या नहीं

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ

जहन्नम	इर्द गिर्द	हम उन्हें ज़रूर हाज़िर करलेंगे	फिर	शैतान (जमा)	हम उन्हें ज़रूर जमा करेंगे	सो तुम्हारे रब की क़सम

جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ

अल्लाह रहमान से	बहुत ज़ियादा	जो उन में से	गिरोह	हर	से	ज़रूर खींच निकालेंगे	फिर	68	घुटनों के बल गिरे हुए

عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَاِنْ

और नहीं	70	दाख़िल होना	ज़ियादा मुस्तहिक़ उस में	वह	उन से जो	ख़ूब वाक़िफ़	अलबत्ता	फिर	69	सरकशी करने वाला

مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّى

हम नजात देंगे	फिर	71	मुक़र्रर किया हुआ	लाज़िम	तुम्हारा रब	पर	है	यहां से गुज़रना होगा	मगर	तुम में से

الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ

उन पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	72	घुटनों के बल गिरे हुए	उस में	ज़ालिम (जमा)	और हम छोड़ देंगे	वह जिन्हों ने परहेज़गारी की

اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ

दोनों फ़रीक़	कौन सा	वह ईमान लाए	उन से जो	कुफ़्र किया	वह जिन्हों ने	कहते हैं	वाज़ेह	हमारी आयतें

خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ

वह	गिरोहों में से	उन से पहले	हम हलाक कर चुके	और कितने ही	73	मज्लिस	और अच्छी	बेहतर मुक़ाम

اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ﴿٧٤﴾ قُلْ مَنْ كَانَ فِى الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ

उस को	तो ढील दे रहा है	गुमराही में	जो है	कह दीजिए	74	और नमूद	सामान	बहुत अच्छे

الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا

और ख़्वाह	अ़ज़ाब	ख़्वाह	जिस का वादा किया जाता है	वह देखेंगे	जब	यहां तक कि	ख़ूब ढील	रहमान

السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾

75	लश्कर	और कमज़ोर तर	बदतर मुक़ाम	वह	कौन	पस अब वह जान लेंगे	क़ियामत

और (फ़रिश्तों ने कहा) हम तुम्हारे रब के हुक्म के बग़ैर नहीं उतरते, उसी के लिए है जो हमारे आगे, और जो हमारे पीछे है और जो उस के दरमियान है, और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं। (64)

वह रब है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उन के दरमियान है, पस तुम उसी की इबादत करो, और उस की इबादत पर साबित क़दम रहो, क्या तू कोई उस का हम नाम जानता है? (65)

और (काफ़िर) इन्सान कहता है क्या जब मैं मर गया तो फिर मैं ज़िन्दा कर के (ज़मीन से) निकाला जाऊँगा! (66)

क्या इन्सान याद नहीं करता (क्या उसे याद नहीं) कि हम ने उसे इस से पहले पैदा किया जब कि वह कुछ भी न था। (67)

सो तुम्हारे रब की क़सम हम उन्हें और शैतानों को ज़रूर जमा करेंगे, फिर हम उन्हें ज़रूर हाज़िर कर लेंगे जहन्नम के गिर्द घुटनों के बल गिरे हुए। (68)

फिर हर गिरोह में से हम उसे ज़रूर खींच निकालेंगे जो उन में अल्लाह रहमान से बहुत ज़ियादा सरकशी करने वाला था। (69)

फिर अलबत्ता हम उन से ख़ूब वाक़िफ़ हैं जो उस (जहन्नम) में दाख़िल होने के ज़ियादा मुस्तहिक़ हैं। (70)

और तुम में से कोई नहीं मगर उसे (हर एक को) यहां से गुज़रना होगा। तुम्हारे रब का अपने ऊपर लाज़िम मुक़र्रर किया हुआ। (71)

फिर हम उन लोगों को नजात देंगे जिन्हों ने परहेज़गारी की, और हम ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे हुए। (72)

और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयतें पढ़ी जाती हैं तो जिन्हों ने कुफ़्र किया वह ईमान लाने वालों से कहते हैं, दोनों फ़रीक़ में से किस का मुक़ाम (मरतबा) बेहतर और मज्लिस अच्छी है? (73)

और इन से पहले हम कितने ही गिरोह हलाक कर चुके हैं, वह सामान और नमूद में (इन से) बहुत अच्छे थे। (74)

कह दीजिए जो गुमराही में है तो उस को अर-रहमान गुमराही में और ख़ूब ढील दे रहा है यहां तक कि वह देख लेंगे, या अ़ज़ाब या क़ियामत जिस का उन से वादा किया जाता है, पस वह तब जान लेंगे कौन है बदतर मुक़ाम (मरतबा) में? और कमज़ोर तर लश्कर में। (75)

وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ

नेकियां	और बाक़ी रहने वाली	हिदायत	हिदायत हासिल की	जिन लोगों ने	अल्लाह	और ज़ियादा देता है

خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِىْ كَفَرَ

इन्कार किया	वह जिस ने	पस क्या तू ने देखा	76	ब एतिबारे अन्जाम	और बेहतर	ब एतिबारे सवाब	तुम्हारे रब के नज़्दीक	बेहतर

بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ

उस ने ले लिया है	या	ग़ैब	क्या वह मुत्तला हो गया है	77	और औलाद	माल	मैं ज़रूर दिया जाऊँगा	और उस ने कहा	हमारे हुक्मों का

عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ

उस को	और हम बढ़ा देंगे	वह जो कहता है	अब हम लिख लेंगे	हरगिज़ नहीं	78	कोई अ़हद	अल्लाह रहमान से

مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوْا

और उन्हों ने बना लिया	80	अकेला	और वह हमारे पास आएगा	जो वह कहता है	और हम वारिस होंगे	79	और लंबा	अ़ज़ाब से

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ؕ سَيَكْفُرُوْنَ

जल्द ही वह इन्कार करेंगे	हरगिज़ नहीं	81	मोजिबे इज़्ज़त	उन के लिए	ताकि वह हो	माबूद	अल्लाह के सिवा

ع ١٧ ٥ ٨ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ

शैतान (जमा)	बेशक हम ने भेजे	क्या तुम ने नहीं देखा	82	मुख़ालिफ़	उन के	और हो जाएंगे	उन की बन्दगी से

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾

84	गिनती	उन की	सिर्फ़ हम गिनती पूरी कर रहे हैं	उन पर	सो तुम जल्दी न करो	83	उकसाते हैं उन्हें खूब उकसाना	काफ़िर (जमा)	पर

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ

गुनाहगार (जमा)	और हांक कर ले जाएंगे	85	मेहमान बना कर	रहमान की तरफ़	परहेज़गार (जमा)	हम जमा कर लेंगे	जिस दिन

وقف لازم اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ

रहमान के पास	जिस ने लिया हो	सिवाए	शफ़ाअ़त	वह इख़्तियार नहीं रखते	86	प्यासे	जहन्नम	तरफ़

وقف لازم عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ﴿٨٩﴾

89	बुरी	एक बात	तहक़ीक़ तुम लाए हो	88	बेटा	रहमान	बना लिया है	और वह कहते हैं	87	इक़रार

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾

90	पारा पारा	पहाड़	और गिर पड़े	ज़मीन	और टुकड़े टुकड़े हो जाए	उस से	फट पड़े	आस्मान	क़रीब है

اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾

92	बेटा	कि वह बनाए	रहमान के लिए	शायान	जब कि नहीं	91	बेटा	रहमान के लिए	कि उन्हों ने पुकारा (मनसूब किया)

اِنْ كُلُّ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِى الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾

93	बन्दा	रहमान	मगर आता है	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	नहीं तमाम (कोई)

لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾

95	अकेला	आएगा उस के सामने क़ियामत के दिन	और उन में से हर एक	94	और उन का शुमार कर लिया है गिन कर	उस ने उन को घेर लिया है

और जिन लोगों ने हिदायत हासिल की अल्लाह उन्हें और ज़ियादा हिदायत देता है, और तुम्हारे रब के नज़्दीक बाक़ी रहने वाली नेकियां बेहतर हैं ब-एतिबारे सवाब और बेहतर हैं ब-एतिबारे अन्जाम। (76)
पस क्या तू ने उस शख़्स को देखा जिस ने हमारे हुक्मों का इन्कार किया? और कहा मैं ज़रूर माल और औलाद दिया जाऊँगा। (77)
क्या वह ग़ैब पर मत्तला हो गया है? या उस ने अल्लाह रहमान से ले लिया है कोई अ़हद। (78)
हरगिज़ नहीं! जो वह कहता है अब हम लिख लेंगे और उस को अ़ज़ाब लंबा बढ़ादेंगे। (79)
और हम वारिस होंगे (ले लेंगे) जो वह कहता है और वह हमारे पास अकेला आएगा। (80)
और उन्हों ने अल्लाह के सिवा (औरों को) माबूद बना लिया है ताकि उन के लिए मोजिबे इज़्ज़त हों। (81)
हरगिज़ नहीं, जल्द ही वह उन की बन्दगी से इन्कार करेंगे और उन के मुख़ालिफ़ हो जाएंगे। (82)
क्या तुम ने नहीं देखा? बेशक हम ने शैतान भेजे हैं काफ़िरों पर, वह उन्हें खूब उकसाते रहते हैं। (83)
सो तुम उन पर (नुज़ूले अ़ज़ाब की) जल्दी न करो, हम तो सिर्फ़ उन की गिनती पूरी कर रहे हैं (उन के दिन गिन रहे हैं)। (84)
(याद करो) जिस दिन हम परहेज़गारों को अल्लाह रहमान की तरफ़ मेहमान बना कर जमा कर लाएंगे। (85)
और हम गुनाहगारों को हांक कर ले जाएंगे जहन्नम की तरफ़ प्यासे। (86)
वह शफ़ाअ़त का इख़्तियार नहीं रखते सिवाए उस के जिस ने अल्लाह रहमान से लिया हो इक़रार। (87)
और वह कहते हैं अल्लाह रहमान ने बेटा बना लिया है, (88)
तहक़ीक़ तुम (ज़बान पर) बुरी बात लाए हो। (89)
क़रीब है (बईद नहीं) कि आस्मान उस से फट पड़ें और ज़मीन टुकड़े टुकड़े हो जाए, और पहाड़ पारा पारा हो कर गिर पड़ें। (90)
कि उन्हों ने अल्लाह के लिए मनसूब किया बेटा। (91)
जब कि रहमान के शायान नहीं कि वह बेटा बनाए। (92)
नहीं कोई जो आस्मानों में है और ज़मीन में है, मगर रहमान के (हुज़ूर) बन्दा हो कर आता है। (93)
उस ने उन को घेर लिया है, और गिन कर उन का शुमार कर लिया है। (94)
और उन में से हर एक क़ियामत के दिन उस के सामने अकेला आएगा। (95)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ

रहमान	उन के लिए	पैदा कर देगा	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक

وُدًّا ﴿۹۶﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ

और डराएं उस से	परहेज़गारों	ताकि आप खुशखबरी दें उस से	आप की ज़बान में	हम ने इसे आसान कर दिया है	पस उस के सिवा नहीं	96	मुहब्बत

قَوْمًا لُّدًّا ﴿۹۷﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ؕ هَلْ تُحِسُّ

तुम देखते हो	क्या	गिरोह	से	उन से क़ब्ल	हम ने हलाक कर दिए	और कितने ही	97	झगड़ालू लोग

ربع ۹ النصف

مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿۹۸﴾ ع

98	आहट	उन की	या तुम सुनते हो	कोई किसी को	उन से

آياتها ١٣٥ ❀ (٢٠) سُوْرَةُ طٰهٰ ❀ رُكُوعَاتُهَا ٨

रुकूआत 8 — (20) सूरह ता हा — आयात 135

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

طٰهٰ ﴿۱﴾ مَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰۤى ﴿۲﴾ لا اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ

उस के लिए जो	याद दिहानी	मगर	2	ताकि तुम मुशक़्क़त में पड़ जाओ	क़ुरआन	तुम पर	हम ने नाज़िल नहीं किया	1	ता हा

يَّخْشٰى ﴿۳﴾ لا تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ﴿۴﴾ ط

4	ऊंचे	और आस्मान (जमा)	ज़मीन	बनाया	से-जिस	नाज़िल किया हुआ	3	डरता है

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿۵﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो	आस्मानों में	उस के लिए जो	5	क़ाइम	अ़र्श पर	रहमान

فِي الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿۶﴾ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ

बात	तू पुकार कर कहे	और अगर	6	गीली मिट्टी	नीचे	और जो	उन दोनों के दरमियान	और जो	ज़मीन में

فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ﴿۷﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ

सब नाम	उसी के लिए	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	अल्लाह	7	और निहायत पोशीदा	भेद	जानता है	तो बेशक वह

وقف لازم

الْحُسْنٰى ﴿۸﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ﴿۹﴾ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ

तो कहा	आग	जब उस ने देखी	9	मूसा (अ)	कोई ख़बर	तुम्हारे पास आई	और क्या	8	अच्छे

لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ

या	चिंगारी	उस से	तुम्हारे पास लाऊँ	शायद मैं	आग	देखी है	बेशक मैं ने	तुम ठहरो	अपने घर वालों को

اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿۱۰﴾ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ﴿۱۱﴾ ط اِنِّيْۤ اَنَا

मैं	बेशक मैं	11	ऐ मूसा (अ)	आवाज़ आई	वह वहां आए	जब पस	10	रास्ता	आग पर-के	मैं पाऊँ

رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿۱۲﴾ ط

12	तुवा	पाक मैदान	बेशक तुम	अपनी जूतियां	सो उतार लो	तुम्हारा रब

बेशक जो लोग ईमान लाए और
उन्हों ने किए अ़मल नेक उन के
लिए पैदा कर देगा रहमान (दिलों
में) मुहब्बत। (96)
पस उस के सिवा नहीं कि हम ने
(क़ुरआन) को आप (स) की ज़बान में
आसान कर दिया ताकि उस से आप (स)
परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी दें और
झगड़ालू लोगों को उस से डराएं। (97)
और इन से क़ब्ल हम ने हलाक
कर दिए कितने ही गिरोह, क्या
तुम उन में से किसी को देखते हो?
या उन की आहट सुनते हो? (98)
अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेह्रबान, रह्म करने वाला है
ता-हा। (1)
हम ने क़ुरआन तुम पर इस
लिए नाज़िल नहीं किया कि तुम
मुशक़्क़त में पड़ जाओ। (2)
मगर उस के लिए नसीहत है जो
डरता है। (3)
नाज़िल किया हुआ है (उस की
तरफ़ से) जिस ने ज़मीन और ऊंचे
आस्मान बनाए। (4)
रहमान अ़र्श पर क़ाइम है। (5)
उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों
में है और जो कुछ ज़मीन में है,
और जो उन दोनों के दरमियान है,
और जो ज़मीन के नीचे है। (6)
और अगर तू पुकार कर कहे बात
तो बेशक वह भेद जानता है और
निहायत पोशीदा (बात को भी)। (7)
अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं,
उसी के लिए हैं सब अच्छे नाम। (8)
और क्या तुम्हारे पास मूसा (अ) की
ख़बर आई? (9)
जब उस ने आग देखी तो अपने घर
वालों से कहा कि तुम ठहरो, बेशक मैं
ने देखी है आग, शायद मैं तुम्हारे पास
उस से चिंगारी ले आऊँ, या आग पर
रास्ते (का पता) पा लूँ। (10)
पस जब वह वहां आए, तो आवाज़
आई ऐ मूसा (अ)! (11)
बेशक मैं ही तुम्हारा रब हूँ, सो
अपनी जूतियां उतार लो, बेशक तुम
तुवा के पाक वादी में हो। (12)

وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ﴿١٣﴾ اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

नहीं कोई माबूद	अल्लाह	मैं	बेशक मैं	13	उस की तरफ़ जो वहि की जाए	पस कान लगा कर सुनो	तुम्हें पसन्द किया	और मैं

اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ﴿١٤﴾ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ

आने वाली	क़ियामत	बेशक	14	मेरी याद के लिए	नमाज़	और क़ाइम करो	पस मेरी इबादत करो	मेरे सिवा

اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعٰى ﴿١٥﴾ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا

उस से जो	पस तुझे रोक न दे	15	उस का जो वह कोशिश करे	शख़्स	हर	ताकि बदला दिया जाए	मैं उसे पोशीदा रखूँ	मैं चाहता हूँ

مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿١٦﴾ وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿١٧﴾

17	ऐ मूसा (अ)	तेरे दाहने हाथ में	यह	और क्या	16	फिर तू हलाक हो जाए	अपनी ख़ाहिश	और वह पीछे पड़ा	उस पर	ईमान नहीं रखता	जो

قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا

इस में	और मेरे लिए	अपनी बकरियां	पर	और मैं पत्ते झाड़ता हूँ इस से	इस पर	मैं टेक लगाता हूँ	मेरा असा	यह	उस ने कहा

مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿١٨﴾ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿١٩﴾ فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ

सांप	तो नागाह वह	पस उस ने डाल दिया	19	ऐ मूसा (अ)	उसे डाल दे	उस ने फ़रमाया	18	और भी	(ज़रूरतें) फ़ाइदे

تَسْعٰى ﴿٢٠﴾ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ﴿٢١﴾

21	पहली	उस की हालत	हम जल्द उसे लौटा देंगे	और न डर	उसे पकड़ ले	फ़रमाया	20	दौड़ता हुआ

وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً

निशानी	ऐब	बग़ैर किसी	सफ़ेद	वह निकलेगा	अपनी बग़ल	तक- से	अपना हाथ	और (मिला) लगा

اُخْرٰى ﴿٢٢﴾ لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿٢٣﴾ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ

बेशक वह	फ़िरऔन	तरफ़	तू जा	23	बड़ी	अपनी निशानियों से	ताकि हम तुझे दिखाएं	22	दूसरी

طَغٰى ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ ع ٢٤ ١٠

और खोल दे	26	मेरा काम	और मेरे लिए आसान कर दे	25	मेरा सीना	मेरे लिए	कुशादा कर दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	24	सरकश हो गया

عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ﴿٢٨﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ

से	मेरा वज़ीर	मेरे लिए	और बना दे	28	मेरी बात	वह समझ लें	27	मेरी ज़बान	से- की	गिरह

اَهْلِيْ ﴿٢٩﴾ هٰرُوْنَ اَخِي ﴿٣٠﴾ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ﴿٣١﴾ وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٣٢﴾

32	मेरे काम में	और शरीक कर दे	31	मेरी कुव्वत	मज़बूत कर उस से	30	मेरा भाई	हारून (अ)	29	ख़ानदान

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾ اِنَّكَ كُنْتَ

तू है	बेशक तू	34	कसरत से	और तुझे याद करें	33	कसरत से	हम तेरी तस्बीह करें	ताकि

بِنَا بَصِيْرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا

और तहक़ीक़ हम ने एहसान किया	36	ऐ मूसा (अ)	जो तू ने मांगा	तहक़ीक़ तुझे दे दिया गया	अल्लाह ने फ़रमाया	35	हमें ख़ूब देखता है

عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿٣٧﴾ اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ﴿٣٨﴾

38	जो इल्हाम करना था	तेरी वालिदा	तरफ़- को	हम ने इल्हाम किया	जब	37	और भी	एक बार	तुझ पर

और मैं ने तुम्हें पसंद किया, पस जो वहि की जाए उस की तरफ़ कान लगा कर सुनो। (13)
बेशक मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो और क़ाइम करो मेरी याद के लिए नमाज़, (14)
बेशक क़ियामत आने वाली है, मैं चाहता हूँ कि उसे पोशीदा रखूँ ताकि हर शख़्स को बदला दिया जाए उस कोशिश का जो वह करे। (15)
पस तुझे उस से वह न रोक दे जो उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़ाहिश के पीछे पड़ा हुआ है, फिर तू हलाक हो जाए। (16)
और ऐ मूसा (अ) यह तेरे दाहने हात में क्या है? (17)
उस ने कहा यह मेरा असा है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ, और इस से पत्ते झाड़ता हूँ अपनी बकरियों पर, और इस में मेरे और भी कई फ़ाइदे हैं। (18)
उस ने फ़रमाया ऐ मूसा (अ)! इसे (ज़मीन पर) डाल दे। (19)
पस उस ने डाल दिया, तो नागाह वह दौड़ता हुआ सांप (बन गया)। (20)
(अल्लाह ने) फ़रमाया उसे पकड़ ले, और न डर, हम जल्द उसे उस की पहली हालत पर लौटा देंगे, (21)
अपना हाथ अपनी बग़ल में लगा ले, वह किसी ऐब के बग़ैर सफ़ेद (चमकता हुआ) निकलेगा, (यह) दूसरी निशानी है। (22)
ताकि हम तुझे दिखाएं अपनी बड़ी निशानियों में से। (23)
तू फ़िरऔन की तरफ़ जा, बेशक वह सरकश हो गया है। (24)
मूसा (अ) ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लिए कुशादा कर दे मेरा सीना। (25)
और मेरे लिए मेरा काम आसान कर दे। (26)
और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे। (27)
कि वह मेरी बात समझ लें। (28)
और बना दे मेरे लिए वज़ीर (मुआविन) मेरे ख़ानदान से, (29)
मेरा भाई हारून (अ)। (30)
उस से मेरी कुव्वत (कमर) मज़बूत कर दे। (31)
और उसे शरीक कर दे मेरे काम में। (32)
ताकि हम कसरत से तेरी तस्बीह करें, (33)
और कसरत से तुझे याद करें। (34)
बेशक तू हमें ख़ूब देखता है। (35)
अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ मूसा (अ)! जो तू ने मांगा तहक़ीक़ तुझे दे दिया गया। (36)
और तहक़ीक़ हम ने तुझ पर एक बार और भी एहसान किया था। (37)
जब हम ने तेरी वालिदा को इल्हाम किया जो इल्हाम करना था। (38)

اَنِ اقْذِفِيْهِ فِى التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِى الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ

दर्या	फिर उसे डाल देगा	दर्या में	फिर उसे डाल दे	सन्दूक़ में	कि तू उसे डाल

بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّىْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً

मुहब्बत	तुझ पर	और मैं ने डाल दी	और उस का दुश्मन	मेरा दुश्मन	उसे ले लेगा	साहिल पर

وقف لازم

مِّنِّىْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِىْ ﴿٣٩﴾ اِذْ تَمْشِىْۤ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ

तो वह कह रही थी	तेरी बहन	जा रही थी	जब	39	मेरी आँखों पर (मेरे सामने)	ताकि तू पर्वरिश पाए	अपनी तरफ़ से

هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰۤى اُمِّكَ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا

उस की आँख	ताकि ठंडी हो	तेरी माँ	तरफ़	पस हम ने तुझे लौटा दिया	उस की पर्वरिश करे	जो	पर	क्या मैं तुम्हें बताऊँ

وَلَا تَحْزَنَ ؕ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ

और तुझे आज़माया	ग़म से	तो हम ने तुझे नजात दी	एक शख़्स	और तू ने क़त्ल करदिया	और वह ग़म न करे

فُتُوْنًا ۫ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِىْۤ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ

वक़्ते मुक़र्रर पर	तू आया	फिर	मदयन वाले	में	कई साल	फिर तू ठहरा रहा	कई आज़माइशें

يٰمُوْسٰى ﴿٤٠﴾ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِىْ ﴿٤١﴾ اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِىْ

मेरी निशानियों के साथ	और तेरा भाई	तू	तू जा	41	ख़ास अपने लिए	और हम ने तुझे बनाया	40	ऐ मूसा (अ)

وَلَا تَنِيَا فِىْ ذِكْرِىْ ﴿٤٢﴾ اِذْهَبَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٤٣﴾ فَقُوْلَا لَهٗ

उस को	तुम कहो	43	सरकश हो गया	बेशक वह	फ़िरऔन	तरफ़ - पास	तुम दोनों जाओ	42	मेरी याद में	और सुस्ती न करना

قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾ قَالَا رَبَّنَاۤ اِنَّنَا نَخَافُ

बेशक हम डरते हैं	ऐ हमारे रब	दोनों बोले	44	वह डर जाए	या	नसीहत पकड़ ले	शायद वह	नर्म बात

اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَاۤ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿٤٥﴾ قَالَ لَا تَخَافَاۤ اِنَّنِىْ مَعَكُمَاۤ اَسْمَعُ

मैं सुनता हूँ	तुम्हारे साथ हूँ	बेशक मैं	तुम डरो नहीं	उस ने फ़रमाया	45	वह हद स बढ़े	या	हम पर	कि वह ज़ियादती करे

وَاَرٰى ﴿٤٦﴾ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَاۤ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۙ

बनी इस्राईल	हमारे साथ	पस भेज दे	तेरा रब	बेशक हम दोनों भेजे हुए	और तुम कहो	पस जाओ उस के पास	46	और मैं देखता हूँ

وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ

और सलाम	तेरा रब	से	निशानी के साथ	हम तेरे पास आए हैं	और उन्हें अ़ज़ाब न दे

عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾ اِنَّا قَدْ اُوْحِىَ اِلَيْنَاۤ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى

पर	अ़ज़ाब	कि	हमारी तरफ़	वहि की गई	बेशक	47	हिदायत	उस ने पैरवी की	जो- जिस	पर

مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾ قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ﴿٤٩﴾ قَالَ رَبُّنَا الَّذِىْۤ اَعْطٰى

अ़ता की	जिस ने	हमारा रब	उस ने कहा	49	ऐ मूसा (अ)	तुम्हारा रब	पस कौन	उस ने कहा	48	और मुंह फेरा	जिस ने झुटलाया

كُلَّ شَىْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ﴿٥٠﴾ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿٥١﴾

51	पहली	जमाअ़तें	हाल	फिर क्या	उस ने कहा	50	रहनुमाई की	फिर	उस की शक्ल ओ सूरत	हर चीज़

कि तू उसे सन्दूक़ में डाल, फिर
सन्दूक़ दर्या में डाल दे, फिर डाल देगा
दर्या उसे साहिल पर, मेरा और उस
का दुश्मन उस को ले लेगा (दर्या से
निकाल लेगा) और मैं ने डाल दी
तुझ पर मुहब्बत अपनी तरफ़ से
(मख़्लूक़ तुझ से मुहब्बत करे) ताकि
तू पर्वरिश पाए मेरे सामने। (39)
और (याद कर) जब तेरी बहन जा रही
थी तो (आले फ़िरऔन से) कह रही
थी कि क्या मैं तुम्हें (उस का पता)
बताऊँ जो इस की पर्वरिश करे?
पस हम ने तुझे तेरी माँ की तरफ़
लौटा दिया, ताकि उस की आँखें
ठंडी हों, और वह ग़म न करे,
और तू ने एक शख़्स को क़त्ल
कर दिया तो हम ने तुझे नजात दी
ग़म से, और तुझे कई आज़माइशों
से आज़माया, फिर कई साल मदयन
वालों में ठहरा रहा, फिर तू आया
वक़्ते मुक़र्रर पर ऐ मूसा (अ)
(मुताबिक़ तक़्दीरे इलाही)। (40)
और मैं ने तुझे ख़ास अपने लिए
बनाया। (41)
तुम और तुम्हारा भाई दोनों जाओ
मेरी निशानियों के साथ, और सुस्ती
न करना मेरी याद में। (42)
तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ,
बेशक वह सरकश हो गया है। (43)
तुम उस को नर्म बात कहो शायद वह
नसीहत पकड़ ले या डर जाए। (44)
वह बोले, ऐ हमारे रब! बेशक हम
डरते हैं कि (कहीं) वह हम पर ज़ियादती
(न) करे या हद से (न) बढ़े। (45)
उस ने फ़रमाया तुम डरो नहीं,
बेशक मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं सुनता
और देखता हूँ। (46)
पस उस के पास जाओ और कहो
बेशक हम दोनों भेजे हुए हैं तेरे रब
के, पस बनी इस्राईल को हमारे साथ
भेज दे और उन्हें अ़ज़ाब न दे, हम
तेरे पास तेरे रब की निशानी के साथ
आए हैं, और सलाम हो उस पर जिस
ने हिदायत की पैरवी की। (47)
बेशक हमारी तरफ़ वहि की गई
है कि अ़ज़ाब है उस पर जिस ने
झुटलाया और मुंह फेरा। (48)
उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! पस
तुम्हारा रब कौन है? (49)
मूसा (अ) ने कहा हमारा रब वह है
जिस ने हर चीज़ को उस की शक्ल
ओ सूरत अ़ता की फिर उस की
रहनुमाई की। (50)
उस ने कहा फिर पहली जमाअ़तों
का क्या हाल है? (51)

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾

52	और न वह भूलता है	मेरा रब	वह न ग़लती करता है	किताब में	मेरा रब	पास	उस का इल्म	उस ने कहा

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا

राहें	उस में	तुम्हारे लिए	और चलाईं	बिछौना	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	वह जिस ने

وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۭ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ﴿٥٣﴾

53	मुख़्तलिफ़	सब्ज़ी	से	जोड़े (अक़्साम)	उस से	फिर हम ने निकाले	पानी	आस्मान	से	और उतारा

كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿٥٤﴾ ۧ مِنْهَا ع ٢ ١١

उस से	54	अक़्ल वालों के लिए	निशानियां	उस में	बेशक	अपने मवेशी	और चराओ	तुम खाओ

خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿٥٥﴾ وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ

और हम ने उसे दिखाईं	55	दूसरी बार	हम निकालेंगे तुम्हें	और उस से	हम लौटा देंगे तुम्हें	और उस में	हम ने तुम्हें पैदा किया

اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿٥٦﴾ قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا

हमारी ज़मीन से	कि तू निकाल दे हमें	क्या तू आया हमारे पास	उस ने कहा	56	तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया	तमाम	अपनी निशानियां

بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾ فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ

और अपने दरमियान	हमारे दरमियान	पस मुक़र्रर कर	उस जैसा	एक जादू	पस ज़रूर हम तेरे मुक़ाबल लाएंगे	57	ऐ मूसा (अ)	अपने जादू के ज़रीए

مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾ قَالَ مَوْعِدُكُمْ

तुम्हारा वादा	उस ने कहा	58	एक हमवार मैदान	तू	और न	हम	हम उस के ख़िलाफ़ न करें	एक वादा (वक़्त)

يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾ فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ

उस ने जमा किया	फ़िरऔन	फिर लौट गया	59	दिन चढ़े	लोग	जमा किए जाएं	और यह कि	ज़ीनत (मेले) का दिन

كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا

झूट	अल्लाह पर	न घड़ो	ख़राबी तुम पर	मूसा (अ)	उन से	उस ने कहा	60	फिर वह आया	अपना दाओ

فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾ فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ

अपने काम में	तो वह झगड़ने लगे	61	जिस ने झूट बान्धा	और वह नामुराद हुआ	अज़ाब से	कि वह हलाक करदे तुम्हें

بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾ قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ

यह चाहते हैं	अलबत्ता जादूगर	यह दोनों	तहक़ीक़	वह कहने लगे	62	मशवरा	और उन्हों ने छुप कर किया	बाहम

اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾

63	अच्छा	तुम्हारा तरीक़ा	और वह लेजाएं	अपने जादू के ज़रीए	तुम्हारी सर ज़मीन	से	कि तुम्हें निकाल दें

فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾

64	ग़ालिब रहा	जो	आज	और तहक़ीक़ कामयाब होगा	सफ़ बान्ध कर	फिर तुम आओ	अपने दाओ	लिहाज़ा इकट्ठे कर लो तुम

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾

65	डालें	जो	पहले	यह कि हम हों	और या	यह कि तू डाले	या तो	ऐ मूसा (अ)	वह बोले

मूसा (अ) ने कहा उस का इल्म मेरे रब के पास किताब में है, मेरा रब न ग़लती करता है, और न भूलता है। (52)
वह जिस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया, और तुम्हारे लिए चलाईं उस में राहें, और आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से सब्ज़ी की मुख़्तलिफ़ अक़्साम निकालीं। (53)
तुम खाओ और अपने मवेशी चराओ, बेशक उस में अक़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (54)
उस (ज़मीन) से हम ने तुम्हें पैदा किया और उसी में हम तुम्हें लौटा देंगे, और उसी से हम तुम्हें दूसरी बार निकालेंगे। (55)
और हम ने उसे (फ़िरऔन) को अपनी तमाम निशानियां दिखाईं तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया। (56)
उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! क्या तू हमारे पास आया है कि तू हमें अपने जादू के ज़रीए हमारी ज़मीन (मुल्क से) निकाल दे। (57)
पस हम तेरे मुक़ाबल ज़रूर लाएंगे उस जैसा एक जादू, पस हमारे और अपने दरमियान एक वक़्त मुक़र्रर कर ले कि न हम उस के ख़िलाफ़ करें और न तू, एक हमवार मैदान (में मुक़ाबला होगा)। (58)
मूसा (अ) ने कहा तुम्हारा वादा मेले का दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े जमा किए जाएं। (59)
फिर लौट गया फ़िरऔन, सो उस ने अपना दाओ (जादू का सामान) जमा किया, फिर आया। (60)
मूसा (अ) ने उन से कहा तुम पर ख़राबी हो, अल्लाह पर न घड़ो झूट कि वह तुम्हें अज़ाब से हलाक करदे, और जिस ने झूट बान्धा वह नामुराद हुआ। (61)
तो वह बाहम अपने काम में झगड़ने लगे और उन्हों ने छुप कर मशवरा किया। (62)
वह कहने लगे तहक़ीक़ यह दोनों जादूगर हैं, यह चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी सर ज़मीन से निकाल दें अपने जादू के ज़रीए, और तुम्हारा अच्छा तरीक़ा ले जाएं (नाबूद कर दें)। (63)
लिहाज़ा अपने दाओ इकट्ठे कर लो, फिर सफ़ बान्ध कर आओ, और तहक़ीक़ कामयाब होगा वही जो आज ग़ालिब रहा। (64)
वह बोले ऐ मूसा (अ)! या तो (पहले अपना दाओ) डाल या हम पहले डालें। (65)

قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ

उन का जादू	से	उस के	ख़याल में आईं	और उन की लाठियां	उन की रस्सियां	तो नागहां	तुम डालो	बल्कि	उस ने कहा

اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ

तुम डरो नहीं	हम ने कहा	67	मूसा (अ)	कुछ ख़ौफ़	अपने दिल में	तो पाया (महसूस किया)	66	दौड़ रही हैं	कि वह

اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾ وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۭ اِنَّمَا

बेशक	जा उन्हों ने बनाया	वह निगल जाएगा	तुम्हारे दाएं हाथ में	जो	और डालो	68	ग़ालिब	तुम ही	बेशक तुम

صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۭ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ

जादूगर	पस डाल दिए गए	69	वह आए	जहां (कहीं)	जादूगर	और कामयाब नहीं होगा	जादूगर	फ़रेब	उन्हों ने बनाया

سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ

पहले	उस पर	तुम ईमान लाए	उस ने कहा	70	और मूसा (अ)	हारून (अ)	रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले	सिज्दे में

اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۭ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ

पस मैं ज़रूर काटूँगा	जादू	तुम्हें सिखाया	वह जिस ने	तुम्हारा बड़ा	बेशक वह	तुम्हें	कि मैं इजाज़त दूँ

اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۡ

खजूर के तने	में-पर	और मैं तुम्हें ज़रूर सूली दूँगा	दूसरी तरफ़ से	और तुम्हारे पाऊँ	तुम्हारे हाथ

وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧١﴾ قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى

पर	हम हरगिज़ तुझे तरजीह न देंगे	उन्हों ने कहा	71	और ता देर रहने वाला	अज़ाब में	ज़ियादा सख़्त	हम में कौन	और तुम खूब जान लोगे

مَا جَاۗءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ۭ

करने वाला	तू	जो	पस तू कर गुज़र	और वह जिस ने हमें पैदा किया	वाज़ेह दलाइल से	जो हमारे पास आए

اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا

कि वह बख़्शदे हमें	अपने रब पर	बेशक हम ईमान लाए	72	दुनिया की ज़िन्दगी	इस	तू करे गा	उस के सिवा नहीं

الثلثة خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿٧٣﴾

73	बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला	और अल्लाह	जादू	से	उस पर	तू ने हमें मजबूर किया	और जो	हमारी ख़ताएं

اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ۭ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا

उस में	न वह मरेगा	जहन्नम	उस के लिए	तो बेशक	मुजरिम बन कर	अपने रब के सामने	जो आया	बेशक वह

وَلَا يَحْيٰى ﴿٧٤﴾ وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰۗىِٕكَ

पस यही लोग	अच्छे	उस ने अमल किए	मोमिन बन कर	उस के पास आया	और जो	74	और न जिएगा

لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿٧٥﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे	जारी हैं	हमेशा रहने वाले	बाग़ात	75	बुलन्द	दरजे	उन के लिए

٣ ع ٢٢ ١٢ الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزٰۗؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾

76	जो पाक हुआ	जज़ा है	और यह	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें

उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम डालो, तो नागहां उन की रस्सियां और उन की लाठियां उस (मूसा अ) के ख़याल में आईं (ऐसे नमूदार हुईं) उन के जादू से कि गोया वह दौड़ रही हैं। (66)

तो मूसा (अ) ने अपने दिल में कुछ ख़ौफ़ महसूस किया। (67)

हम ने कहा तुम डरो नहीं, बेशक तुम ही ग़ालिब रहोगे। (68)

और जो तुम्हारे दाएं हाथ में है डालो वह निगल जाएगा जो कुछ उन्हों ने बनाया है, बेशक (जो कुछ) उन्हों ने बनाया है वह जादूगर का फ़रेब है, और जादूगर किसी शान से आए वह कामयाब नहीं होता। (69)

पस जादूगर सिज्दे में डाल दिए गए (गिर पड़े) वह बोले हम हारून (अ) और मूसा (अ) के रब पर ईमान लाए। (70)

फ़िरऔन ने कहा तुम उस पर ईमान ले आए (इस से) पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, बेशक वह (मूसा अ) तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है, पस मैं ज़रूर काट डालूँगा तुम्हारे हाथ पाऊँ (जानिब) ख़िलाफ़ से (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ) और मैं ज़रूर तुम्हें खजूर के तनों पर सूली दूँगा, और तुम खूब जान लोगे कि हम दोनों में से किस का अज़ाब ज़ियादा सख़्त और देर पा है। (71)

उन्हों ने कहा हम तुझे हरगिज़ तरजीह न देंगे उन वाज़ेह दलाइल से जो हमारे पास आए हैं और उस पर जिस ने हमें पैदा किया है, पस तू कर गुज़र जो तू करने वाला है, उस के सिवा नहीं कि तू (सिर्फ़) इस दुनिया की ज़िन्दगी में करेगा। (72)

बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए कि वह हमारी ख़ताएं बख़्शदे और उस पर जो तू ने हमें जादू के लिए मजबूर किया, और अल्लाह बेहतर है और हमेशा बाक़ी रहने वाला है। (73)

बेशक वह, जो अपने रब के सामने आया मुजरिम बन कर तो बेशक उस के लिए जहन्नम है, न वह उस में मरेगा और न जिएगा। (74)

और जो उस के पास मोमिन बन कर आया और उस ने अच्छे अमल किए, पस यही लोग हैं जिन के लिए दरजे बुलन्द हैं। (75)

हमेशा रहने वाले बाग़ात, जारी हैं उन के नीचे नहरें, उन में हमेशा रहेंगे, और यह जज़ा है (उस की) जो पाक हुआ। (76)

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِىْ فَاضْرِبْ

पस बना लेना	मेरे बन्दे	कि रातों रात लेजा	मूसा (अ)	तरफ़-को	और तहक़ीक़ हम ने वहि की

لَهُمْ طَرِيْقًا فِى الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ﴿٧٧﴾

77	और न डर	पकड़ना	ख़ौफ़ होगा	न	ख़श्क	दर्या में	रास्ता	उन के लिए

فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾

78	जैसा कि उन को ढांप लिया	दर्या से	उन्हें ढांप लिया	अपने लशकर के साथ	फ़िरऔन	फिर उन का पीछा किया

وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ

तहक़ीक़	ऐ बनी इस्राईल	79	और न हिदायत दी	अपनी क़ौम	फ़िरऔन	और गुमराह किया

اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ

दाएं	कोहे तूर	जानिब	और हम ने तुम से वादा किया	तुम्हारा दुश्मन	से	हम ने तुम्हें नजात दी

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ﴿٨٠﴾ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ

पाकीज़ा चीज़ें	से	तुम खाओ	80	और सलवा	मन्न	तुम पर	और हम ने उतारा

مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِىْ ۚ وَمَنْ

और जो	मेरा ग़ज़ब	तुम पर	कि उतरेगा	उस में	और न सरकशी करो	जो हम ने तुम्हें दिया

يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِىْ فَقَدْ هَوٰى ﴿٨١﴾ وَاِنِّىْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ

उस को जो	बड़ा बख़्शने वाला	और बेशक मैं	81	तो वह गिरा (नीस्त ओ नाबूद हुआ)	मेरा ग़ज़ब	उस पर	उतरा

تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾ وَمَآ اَعْجَلَكَ

तुझे जल्द लाई	और क्या (चीज़)	82	हिदायत पर रहा	फिर	नेक	और उस ने अमल किया	और वह ईमान लाया	तौबा की

عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِىْ

मेरे पीछे	यह हैं	वह	उस ने कहा	83	ऐ मूसा (अ)	अपनी क़ौम से

وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا

आज़माइश में डाला	तहक़ीक़	पस हम ने	उस ने कहा	84	ताकि तू राज़ी हो	ऐ मेरे रब	तेरी तरफ़	और मैं ने जल्दी की

قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِىُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ

पस लौटा	85	सामरी	और उन्हें गुमराह किया	तेरे बाद	तेरी क़ौम

مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ

क्या तुम से वादा नहीं किया था	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	अफ़सोस करता	गुस्से में भरा हुआ	अपनी क़ौम की तरफ़	मूसा (अ)

رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۗ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ

या तुम ने चाहा	मुद्दत	तुम पर	क्या तवील हो गई	अच्छा वादा	तुम्हारा रब

اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِىْ ﴿٨٦﴾

86	मेरा वादा	फिर तुम ने ख़िलाफ़ किया	तुम्हारा रब	से-का	ग़ज़ब	तुम पर	कि उतरे

और तहक़ीक़ हम ने वहि की मूसा (अ) को कि रातों रात मेरे बन्दों को (निकाल) ले जा, उन के लिए दर्या में (असा मार कर) ख़श्क रास्ता बना लेना, न तुझे पकड़ने का ख़ौफ़ होगा और न (ग़र्क़ होने का) डर होगा। (77)

फिर फ़िरऔन ने अपने लशकर के साथ उन का पीछा किया तो उन्हें दर्या (की मौजों) ने ढांप लिया, जैसा कि ढांप लिया (बिलकुल ग़र्क़ कर दिया)। (78)

और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और हिदायत न दी। (79)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! तहक़ीक़ हम ने तुम्हारे दुश्मन से तुम्हें नजात दी और कोहे तूर के दाएं जानिब तुम से (तौरेत अता करने का) वादा किया और हम ने तुम पर उतारा "मन्न" और "सलवा"। (80)

जो हम ने तुम्हें दिया उस में से पाकीज़ा चीज़े खाओ, और उस में सरकशी न करो कि तुम पर उतरे मेरा ग़ज़ब, और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा वह नीस्त ओ नाबूद हुआ। (81)

और बेशक मैं बड़ा बख़्शने वाला हूँ उस को जिस ने तौबा की, और वह ईमान लाया और उस ने अमल किया नेक, फिर हिदायत पर रहा। (82)

और ऐ मूसा (अ)! और क्या चीज़ तुझे अपनी क़ौम से जल्द लाई (क्यों जल्दी की)? (83)

उस ने कहा वह मेरे पीछे (आ ही रहे) हैं, मैं ने तेरी तरफ़ (आने में) जल्दी की ताकि तू राज़ी हो। (84)

उस ने कहा पस हम ने तहक़ीक़ तेरी क़ौम को आज़माइश में डाला, और उन्हें सामरी ने गुमराह किया। (85)

पस मूसा (अ) अपनी क़ौम की तरफ़ लौटे, गुस्से में भरे हुए, अफ़सोस करते हुए, कहा ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था? क्या तवील हो गई तुम पर (मेरी जुदाई की) मुद्दत? या तुम ने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे? फिर तुम ने ख़िलाफ़ किया मेरे वादे के (वादा ख़िलाफ़ी की)। (86)

قَالُوْا مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ

से - का	बोझ	हम पर लादा गया	और लेकिन (बलकि)	अपने इख़्तियार से	तुम्हारा वादा	हम ने ख़िलाफ़ नहीं किया	वह बोले

زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا

एक बछड़ा	उन के लिए	फिर उस ने निकाला	87	सामरी	डाला	फिर उसी तरह	तो हम ने उसे डाल दिया	क़ौम का ज़ेवर

جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰـهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۬ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾

88	फिर वह भूल गया	मूसा (अ)	और माबूद	तुम्हारा माबूद	यह	फिर उन्हों ने कहा	गाय की आवाज़	उस के लिए	एक क़ालिब

ع ١٣ ١٣ اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾

89	और न नफ़ा	नुक़्सान	उन के	और इख़्तियार नहीं रखता	बात (जवाब)	उन की तरफ़	कि वह नहीं फेरता	पस क्या वह नहीं देखते

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ

और बेशक	इस से	तुम आज़माए गए	इस के सिवा नहीं	ऐ मेरी क़ौम	उस से पहले	हारून (अ)	उन से	कहा	और तहक़ीक़

رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ

हम हरगिज़ जुदा न होंगे	उन्हों ने कहा	90	मेरी बात	और इताअ़त करो (मानो)	सो मेरी पैरवी करो	रहमान है	तुम्हारा रब

عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾ قَالَ يٰهٰرُوْنُ

ऐ हारून (अ)	उस ने कहा	91	मूसा (अ)	हमारी तरफ़	लौटे	यहां तक कि	जमे हुए	उस पर

مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ﴿٩٢﴾ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ۭ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾

93	मेरा यह हुक्म	तो क्या तू ने नाफ़रमानी की	कि तू न मेरी पैरवी करे	92	वह गुमराह हो गए	तू ने देखा उन्हें	जब	तुझे किस चीज़ ने रोका

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ

डरा	बेशक मैं	और न सर से	मुझे दाढ़ी से	न पकड़ें	ऐ मेरे माँ जाए	उस ने कहा

اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾ قَالَ

उस ने कहा	94	मेरी बात	और न ख़याल रखा	बनी इस्राईल	दरमियान	तू ने तफ़रिक़ा डाल दिया	कि तुम कहोगे

فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ

उस को	उन्हों ने न देखा	वह जो कि	मैं ने देखा	वह बोला	95	ऐ सामरी	तेरा हाल	पस क्या

فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ

फुसलाया	और इसी तरह	तो मैं ने वह डालदी	रसूल का नक़्शे क़दम	से	एक मुट्ठी	पस मैं ने मुट्ठी भर ली

لِيْ نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا

न	तू कहे	कि	ज़िन्दगी में	बेशक तेरे लिए	पस तू जा	उस ने कहा	96	मेरा नफ़्स	मुझे

مِسَاسَ ۠ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ

वह जिस	अपने माबूद	तरफ़	और देख	हरगिज़ तुझ से ख़िलाफ़ न होगा	एक वक़्त मुक़र्रर	तेरे लिए	और बेशक	छूना (हाथ लगाना)

ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۭ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾

97	उड़ा कर	दर्या में	फिर अलबत्ता उसे बिखेर देंगे	हम उसे अलबत्ता जलाएंगे	जमा हुआ	उस पर	तू रहता था

वह बोले हम ने अपने इख़्तियार से तुम्हारे वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया, बल्कि हम पर बोझ लादा गया क़ौम के ज़ेवर का, तो हम ने उसे (आग में) डाल दिया, फिर उसी तरह सामरी ने डाला। (87) फिर उस ने उन के लिए एक बछड़ा निकाला (बनाया), एक मूर्ति जिस में गाय की आवाज़ निकलती थी, फिर उन्हों ने कहा यह तुम्हारा माबूद है, और मूसा (अ) का माबूद है, वह (मूसा अ) तो भूल गया है। (88) भला क्या वह नहीं देखते? कि वह (बछड़ा) उन की तरफ़ बात नहीं फेरता (उन को जवाब नहीं देता) न उन के नुक़्सान का इख़्तियार रखता है और न नफ़ा का। (89) और तहक़ीक़ उन से हारून (अ) ने उस से पहले कहा था कि ऐ मेरी क़ौम! इस के सिवा नहीं कि तुम इस से आज़माए गए हो और बेशक तुम्हारा रब रहमान है, सो मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो। (90) उन्हों ने कहा हम हरगिज़ उस से जुदा न होंगे जमे हुए (बैठे रहेंगे) यहां तक कि मूसा (अ) हमारी तरफ़ लौटें। (91) उस (मूसा अ) ने कहा ऐ हारून (अ)! तुझे किस चीज़ ने रोका जब तू ने देखा कि वह गुमराह हो गए हैं। (92) कि तू न मेरी पैरवी करे? तो क्या तू ने नाफ़रमानी की मेरे हुक्म की? (93) उस ने कहा ऐ मेरे माँ जाए! मुझे दाढ़ी से और न सर (के बालों) से पकड़ें, बेशक मैं डरा कि तुम कहोगे कि तू ने फोट डाल दिया बनी इस्राईल के दरमियान, और मेरी बात का ख़याल न रखा। (94) (फिर मूसा अ ने सामरी से) कहा ऐ सामरी! तेरा क्या हाल है? (95) वह बोला मैं ने वह देखा जिस को उन्हों ने नहीं देखा, पस मैं ने रसूल के नक़्शे क़दम से एक मुट्ठी भर ली तो मैं ने वह (बछड़े के क़ालिब में) डाल दी और इसी तरह मेरे नफ़्स ने मुझे फुसलाया। (96) मूसा (अ) ने कहा पस तू जा, बेशक तेरे लिए ज़िन्दगी में (यह सज़ा) है कि तू कहता फिरे: न छूना मुझे, और बेशक तेरे लिए एक वक़्ते मुक़र्रर है, हरगिज़ तुझ से ख़िलाफ़ न होगा (न टलेगा), और अपने माबूद की तरफ़ देख जिस पर तू (बैठा) रहता था जमा हुआ, हम उसे अलबत्ता जला देंगे फिर इस (की राख) उड़ा कर दर्या में ज़रूर बिखेर देंगे। (97)

إِنَّمَآ إِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۭ وَسِعَ كُلَّ شَىْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

98	इल्म	हर शै	वसीअ़ (मुहीत है)	उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं	वह जो	अल्लाह	तुम्हारा माबूद	इस के सिवा नहीं

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا

अपने पास से	और तहक़ीक़ हम ने तुम्हें दिया	गुज़र चुका	जो	ख़बरें अहवाल	से	तुझ पर - से	हम बयान करते हैं	इसी तरह

ذِكْرًا ۚ ﴿٩٩﴾ مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾ خٰلِدِيْنَ

वह हमेशा रहेंगे	100	(भारी) बोझ	क़ियामत के दिन	लादेगा	तो बेशक वह	उस से	मुंह फेरा	जिस	99	(किताबे) नसीहत

فِيْهِ ۭ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ

और हम इकटठा करेंगे	सूर में	फूंक मारी जाएगी	जिस दिन	101	बोझ	क़ियामत के दिन	उन के लिए	और बुरा है	उस में

الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا

मगर (सिर्फ़)	तुम रहे	नहीं	आपस में	आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे	102	नीली आँखें	उस दिन	मुज्रीमों को

عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ إِذْ يَقُوْلُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً إِنْ

नहीं	राह	सब से अच्छी	जब कहेगा	वह कहते हैं	वह जो	खूब जानते हैं	हम	103	दस दिन

لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّىْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ ع ١٥ / ١٤

105	उड़ा कर	मेरा रब	उन्हें बिखेर देगा	तो कह दें	पहाड़ के बारे में	और वह आप से दर्याफ़्त करेंगे	104	एक दिन	मगर	रहे तुम

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ أَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ

उस दिन	107	कोई बुलन्दी	और न	कोई कजी	उस में	न देखेगा तू	106	एक हमवार	मैदान	फिर उसे छोड़ देगा

يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِىَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ

रहमान के लिए (सामने)	आवाज़ें	और पस्त होजाएंगी	उस के लिए	नहीं कोई कजी	एक पुकारने वाला	वह सब पीछे चलेंगे

فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ

इजाज़त दे उस को	जिस	मगर	कोई शफ़ाअ़त	न नफ़ा देगी	उस दिन	108	आहिस्ता आवाज़	मगर (सिर्फ़)	बस तू न सुनेगा

الرَّحْمٰنُ وَرَضِىَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

उन के पीछे	और जो	उन के हाथों के दरमियान (आगे)	जो	वह जानता है	109	बात	उस की	और पसन्द करे	रहमान

وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَىِّ الْقَيُّوْمِ ۭ

"कय्यूम"	सामने "हैय"	चेहरे	झुक जाएंगे	110	इल्म के अन्दर	उस का	और वह अहाता नहीं कर सकते

وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ

मोमिन	और वह	नेकी	से - कोई	करे	और जो	111	ज़ुल्म	बोझ उठाया	जो - जिस	और नामुराद हुआ

فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾ وَكَذٰلِكَ أَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا

अरबी	कुरआन	हम ने उस पर नाज़िल किया	और उसी तरह	112	और न किसी नुक़्सान का	किसी ज़ुल्म का	तो न उसे ख़ौफ़ होगा

وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

113	कोई नसीहत	उन के लिए	या वह पैदा करदे	परहेज़गार हो जाएं	ताकि वह	डरावे	से	और हम ने तरह तरह से बयान किए उस में

इस के सिवा नहीं कि तुम्हारा माबूद अल्लाह है, वह जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का इल्म हर शै पर मुहीत है। (98)
उसी तरह हम तुम से (वह) अहवाल बयान करते हैं जो गुज़र चुके, और तहक़ीक़ हम ने तुम्हें अपने पास से किताबे नसीहत (कुरआन) दिया। (99)
जिस ने उस से मुँह फेरा वह बेशक लादेगा क़ियामत के दिन भारी बोझ। (100)
वह उस में हमेशा रहेंगे, और बुरा है उन के लिए क़ियामत के दिन का बोझ। (101)
जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी, और हम मुज्रीमों को इकटठा करेंगे उस दिन (उन की) आँखें नीली (बे नूर होंगी)। (102)
आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे तुम (दुनिया में) सिर्फ़ दस दिन रहे हो। (103)
वह जो कहते हैं हम खूब जानते हैं जब उन का सब से अच्छी राह वाला (होशमन्द) कहेगा तुम सिर्फ़ एक दिन रहे हो। (104)
और वह आप (स) से पहाड़ो के बारे में दर्याफ़्त करते हैं, तो आप (स) कह दें मेरा रब उन्हें उड़ा कर बिखेर देगा। (105)
फिर उसे (ज़मीन को) एक हमवार मैदान कर छोड़ेगा। (106)
और तू न देखेगा उस में कोई कजी (नाहमवारी) और न कोई बुलन्दी। (107)
उस दिन सब पीछे चलेंगे एक पुकारने वाले के, उस के लिए कोई कजी न होगी और अल्लाह के सामने आवाज़ें पस्त हो जाएंगी, बस तू सिर्फ़ पस्त आवाज़ सुनेगा। (108)
उस दिन कोई शफ़ाअ़त नफ़ा न देगी मगर जिस को अल्लाह इजाज़त दे, और उस की बात पसंद करे। (109)
वह जानता है जो कुछ उन के आगे और उन के पीछे है, और वह (अपने इल्म में) उस का अहाता नहीं कर सकते। (110)
और चेहरे झुक जाएंगे "हैय ओ क़य्यूम" (ज़िन्दा क़ाइम) के सामने, और नामुराद हुआ वह जिस ने ज़ुल्म का बोझ उठाया। (111)
और जो कोई नेकी करे, बशर्त यह कि वह मोमिन हो तो न उसे किसी ज़ुल्म का ख़ौफ़ होगा और न किसी नुक़्सान का। (112)
और उसी तरह हम ने उस पर कुरआन नाज़िल किया अ़रबी में और हम ने उस में तरह तरह से डरावे बयान किए ताकि वह परहेज़गार हो जाएं या वह उन के लिए कोई नसीहत पैदा कर दे। (113)

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ

कि	इस से क़ब्ल	क़ुरआन में	जल्दी करो	और न	सच्चा	बादशाह	सो बुलन्द ओ बरतर है अल्लाह

يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۡ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَآ

और हम ने हुक्म भेजा	114	इल्म	ज़ियादा दे मुझे	ऐ मेरे रब	और कहिए	उस की वहि	तुम्हारी तरफ़	पूरी की जाए

ع ٦ ١١ ١٥ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ

फ़रिश्तों को	और (याद करो) जब हम ने कहा	115	पुख़्ता इरादा	उस में	और हम ने न पाया	तो वह भूल गया	उस से क़ब्ल	आदम की तरफ़

اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا

बेशक यह	ऐ आदम (अ)	पस हम ने कहा	116	उस ने इन्कार किया	इब्लीस	सिवाए	तो सब ने सिज्दा किया	आदम को	तुम सिज्दा करो

عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾ اِنَّ

बेशक	117	फिर तुम मुसीबत में पड़ जाओ	जन्नत से	न निकलवा दे	सो तुम्हें	और तुम्हारी बीवी का	तुम्हारा	दुश्मन

لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾

119	और न धूप में रहोगे	इस में	प्यासे रहोगे	न	और यह कि तुम	118	नंगे	और न	इस में	यह कि न भूके रहो	तुम्हारे लिए

فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ

दरख़्त	पर	मैं तेरी रहनुमाई करूं	क्या	ऐ आदम (अ)	उस ने कहा	शैतान	उस की तरफ़ (दिल में)	फिर वस्वसा डाला

الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا

उन की शर्मगाहें	उन पर	तो ज़ाहिर होगईं	उस से	पस दोनों ने खाया	120	न पुरानी हो (ज़वाल पज़ीर न हो)	और बादशाहत	हमेशगी

وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۡ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ

अपना रब	आदम (अ)	और नाफ़रमानी की	जन्नत के पत्ते	से	अपने ऊपर	और वह दोनों लगे जोड़ने (ढांपने)

فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهْبِطَا

तुम दोनों उतर जाओ	फ़रमाया	122	और उसे राह दिखाई	उस पर	तवज्जुह फ़रमाई	उस का रब	उस को चुन लिया	फिर	121	तो वह बहक गया

مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى ۙ

हिदायत	मेरी तरफ़ से	तुम्हारे पास आए	पस अगर	दुश्मन	बाज़ के	तुम में से बाज़	सब	यहां से

فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ اَعْرَضَ

मुँह मोड़ा	और जिस	123	बदबख़्त होगा	और न	तो न वह गुमराह होगा	मेरी हिदायत	पैरवी की	तो जिस ने

عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

क़ियामत के दिन	और हम उसे उठाएंगे	तंग	गुज़रान	उस के लिए	तो बेशक	मेरे ज़िक्र-नसीहत	से

اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾

125	बीना-देखता	और मैं तो था	अन्धा	तू ने मुझे क्यों उठाया	ऐ मेरे रब	वह कहेगा	124	अन्धा

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾

126	हम तुझे भुला देंगे	आज	और इसी तरह	तो तू ने उन्हें भुला दिया	हमारी आयात	तेरे पास आईं	इसी तरह	वह फ़रमाएगा

सो अल्लाह बुलन्द ओ बरतर है सच्चा बादशाह, और तुम क़ुरआन (पढ़ने) में जल्दी न करो, इस से क़ब्ल के तुम्हारी तरफ़ पूरी की जाए उस की वहि, और कहिए ऐ मेरे रब! मुझे और ज़ियादा इल्म दे। (114)
और हम ने उस से क़ब्ल आदम (अ) की तरफ़ हुक्म भेजा तो वह भूल गया और हम ने उस में पुख़्ता इरादा न पाया। (115)
और याद करो जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम आदम (अ) को सिज्दा करो तो सब ने सिज्दा किया सिवाए इब्लीस के, उस ने इन्कार किया। (116)
पस हम ने कहा ऐ आदम (अ)! बेशक यह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है। सो तुम्हें निकलवा न दे जन्नत से, फिर तुम तक्लीफ़ में पड़ जाओ। (117)
बेशक तुम्हारे लिए (जन्नत में) यह है कि इस में न भूके रहो, न नंगे। (118)
और यह कि तुम न प्यासे रहोगे और न धूप में तपोगे। (119)
फिर शैतान ने उस के दिल में वस्वसा डाला, उस ने कहा ऐ आदम (अ)! क्या मैं तेरी रहनुमाई करूं हमेशगी के दरख़्त पर? और वह बादशाहत जो ज़वाल पज़ीर न हो? (120)
पस उन दोनों ने उसे खा लिया तो उन पर उन की शर्मगाहें ज़ाहिर हो गईं, और अपने (जिस्म के) ऊपर जन्नत के पत्तों से ढांपने लगे, और आदम (अ) ने अपने रब की नाफ़रमानी की तो वह बहक गया। (121)
फिर उस को चुन लिया उस के रब ने, फिर उस पर (रहमत से) तवज्जुह फ़रमाई (तौबा क़ुबूल की) और उसे राह दिखाई। (122)
फ़रमाया तुम दोनों यहां से उतर जाओ, तुम्हारी (औलाद में से) बाज़ बाज़ के दुश्मन होंगे, पस अगर (जब भी) मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास मेरी हिदायत आए तो जिस ने मेरी हिदायत की पैरवी की वह न गुमराह होगा और न बदबख़्त होगा। (123)
और जिस ने मेरे ज़िक्र (नसीहत) से मुँह मोड़ा तो बेशक उस की मईशत (गुज़रान) तंग होगी और हम उसे उठाएंगे क़ियामत के दिन अन्धा। (124)
वह कहेगा, ऐ मेरे रब! तू ने मुझे अन्धा क्यों उठाया? मैं तो (दुनिया में) बीना (देखता) था। (125)
वह फ़रमाएगा इसी तरह तेरे पास हमारी आयात आईं तो तू ने उन्हें भुलाया, और इसी तरह आज हम तुझे भुला देंगे। (126)

وَكَذٰلِكَ نَجْزِىْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ

और अलबत्ता अ़ज़ाब	अपना रब	आयतों पर	और न ईमान लाए	हद से निकल जाए	जो	हम बदला देते हैं	और इसी तरह

الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٧﴾ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ

उन से क़ब्ल	हम ने हलाक कर दीं	कितनी ही	उन्हें	क्या हिदायत न दी	127	और ज़ियादा देर तक रहने वाला है	शदीद तरीन	आख़िरत

ع ١٣ ١٦ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِىْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿١٢٨﴾ ع

128	अ़क़्ल वालों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	उस	में	बेशक	उन के मसाकिन में	वह चलते फिरते हैं	क़ौमें-जमाअ़तें

وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾

129	मुक़र्रर	और मीआ़द	अ़ज़ाब	तो ज़रूर आजाता	तुम्हारा रब	से	हो चुकी	एक बात	और अगर न

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ

तुलूअ़े आफ़्ताब	पहले	अपना रब	तारीफ़ के साथ	और तस्बीह करें	जो वह कहते हैं	पर	पस सब्र करें

وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ

दिन	और किनारे	पस तस्बीह करें	रात की घड़ियां	और कुछ	उस के ग़ुरूब	और पहले

لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿١٣٠﴾ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا

जोड़े	उस से	जो हम ने बरतने को दिया	तरफ़	अपनी आँखें	और न फैलाना	130	ख़ुश हो जाओ	ताकि तुम

مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ

तेरा रब	और अ़तिया	उस में	ताकि हम उन्हें आज़माएं	दुनिया की ज़िन्दगी	आराइश	उन से-के

خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٣١﴾ وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ

उस पर	और क़ाइम रहो	नमाज़ का	अपने घर वाले	और हुक्म दो तुम	131	और तादेर रहने वाला	बेहतर

لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٢﴾ وَقَالُوْا

और वह कहते हैं	132	अहले तक़्वा के लिए	और अन्जाम	तुझे रिज़्क़ देते हैं	हम	रिज़्क़	हम तुझ से नहीं मांगते

لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِى الصُّحُفِ

सहीफ़े	में	जो	वाज़ेह निशानी	उन के पास नहीं आई	क्या	अपना रब	से	कोई निशानी	क्यों नहीं लाते

الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾ وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا

तो वह कहते	इस से क़ब्ल	किसी अ़ज़ाब से	उन्हें हलाक कर देते	हम	और अगर	133	पहले

رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ

इस से क़ब्ल	तेरे अहकाम	तो हम पैरवी करते	कोई रसूल	हमारी तरफ़	क्यों तू ने न भेजा	ऐ हमारे रब

اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿١٣٤﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ

पस तुम इन्तिज़ार करो	मुन्तज़िर हैं	सब	कह दें	134	और हम रुस्वा हों	कि हम ज़लील हों

ع ٨ ١٧ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿١٣٥﴾ ع

135	उस ने हिदायत पाई	और कौन	सीधा	रास्ता	वाले	कौन	सो अ़नक़रीब तुम जान लोगे

और इसी तरह हम (उस को) बदला देते हैं जो हद से निकल जाए और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए, और अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब शदीद तरीन है और ज़ियादा देर तक रहने वाला है। **(127)**

क्या (उस हक़ीक़त ने भी) उन्हें हिदायत न दी कि उन से क़ब्ल हम ने कितनी ही जमाअ़तें हलाक कर दीं, वह चलते फिरते हैं उन के मसाकिन में, अलबत्ता बेशक उस में अ़क़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। **(128)**

और अगर तुम्हारे रब की (तरफ़) से एक बात (तै) न हो चुकी होती और मीआ़द मुक़र्रर (न होती) तो अ़ज़ाब ज़रूर (नाज़िल) हो जाता। **(129)**

पस वह जो कहते हैं उस पर सब्र करें, तारीफ़ के साथ अपने रब की तस्बीह करें, (पाकीज़गी) बयान करें तुलूअ़-ए-आफ़ताब से पहले, और ग़ुरुबे आफ़्ताब से पहले, और कुछ रात की घड़ियों में, पस उस की तस्बीह करें, और किनारे दिन के (दोपहर ज़ुहर के वक़्त) ताकि तुम ख़ुश हो जाओ। **(130)**

और अपनी आँखें (उन चीज़ों की) तरफ़ न फैलाना जो हम ने बरतने को दी हैं उन के जोड़ों को, दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश ओ ज़ेबाइश (बना कर) ताकि हम उस में उन्हें आज़माएं, और तेरे रब का अ़तिया बेहतर है और सब से ज़ियादा तादेर रहने वाला है। **(131)**

और तुम अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, और उस पर क़ाइम रहो, हम तुझ से नहीं मांगते रिज़्क़ (बल्कि) हम तुझे रिज़्क़ देते हैं और अन्जाम (बख़ैर) अहले तक़्वा के लिए है। **(132)**

और वह कहते हैं हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाए अपने रब की तरफ़ से, क्या उन के पास (वह) वाज़ेह निशानी नहीं आई जो पहले सहीफ़ों में है। **(133)**

और अगर हम उन्हें हलाक कर देते (रसूलों के) आने से क़ब्ल किसी अ़ज़ाब से तो वह कहते ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा? तो हम इस से क़ब्ल कि ज़लील और रुस्वा हों हम तेरे अहकाम की पैरवी करते। **(134)**

आप (स) कह दें, सब मुन्तज़िर हैं, पस तुम (अभी) इन्तिज़ार करो, सो अ़नक़रीब तुम जान लोगे, कौन हैं सीधे रास्ते वाले और कौन है जिस ने हिदायत पाई। **(135)**